

Birthday Puja

Date : 21st March 1997
Place : Delhi
Type : Puja
Speech : Hindi & English
Language

CONTENTS

I Transcript

| | |
|---------|---------|
| Hindi | 02 - 08 |
| English | 09 - 11 |
| Marathi | - |

II Translation

| | |
|---------|---------|
| English | 12 - 15 |
| Hindi | 16 - 19 |
| Marathi | 20 - 27 |

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

जब सब दुनिया सोती है तब एक सहजयोगी जागता है और जब सब दुनिया जागती है तो सहजयोगी सोता है। इसका मतलब ये होता है कि जिन चीजों की तरफ सहजयोगियों का रुख है उस तरफ और लोगों का रुख नहीं। उनका रुख और चीजों में है। किसी न किसी तरह से वो सत्य से विमुख हैं, मानें किसी को पैसे का चक्कर, किसी को सत्ता का चक्कर, न जाने कैसे-कैसे चक्कर में इंसान घूमता रहता है और भूला-भटका, सत्य से परे, उसकी ओर उसकी नज़र नहीं है। कोई कहेगा कि इसका कारण ये है, उसका कारण ये है कोई न कोई विश्लेषण कर सकता है। पर मैं सोचती हूँ अज्ञान! अज्ञान में मनुष्य न जाने क्या-क्या करता है। एक तरह का अंधकार, घना अंधकार, छा जाता है। जैसे अभी यहाँ अगर अंधकार हो जाए तो न जाने भगदड़ मच जाए, कुछ लोग उठकर भागना शुरू कर दें, कितने लोगों को गिरा दें, उनके ऊपर पाँव रख दें, उन्हें चोट लग जाए। कुछ भी हो सकता है। इस अंधकार में हम लोग जब रहते हैं तब हमारी निद्रा अवस्था है। लेकिन हम जब जागृत हो गए, जब कुण्डलिनी का जागरण हो गया और जब आप सत्य के सामने खड़े हो जाते हैं तो सत्य की महिमा का वर्णन कोई नहीं कर सकता। मैंने पूछा किसी से, 'भई, सहज में तुम्हें क्या मिला?' बोले, 'माँ, ये नहीं बता सकते पर सब कुछ मिल गया।' सब कुछ माने क्या? मैं भी कहूँगी कि आज के दिन मुझे सहज में सब कुछ मिल गया है। मैं जब छोटी थी तो अपने पिता से कहती थी कि मैं चाहती हूँ कि जैसे आकाश में तारे हैं ऐसे दुनिया में अनेक लोग तारे जैसे चमकें और परमात्मा का प्रकाश फैलाएं। कहने लगे, 'हो सकता है। तुम सामूहिक चेतना जागृत करने की व्यवस्था करो और कुछ भाषण मत दो, कुछ लिखो नहीं, नहीं तो दूसरा बाईबल तैयार हो जाएगा, कुरान तैयार हो जाएगा और एक झगड़े की चीज़ शुरू हो जाएगी। सो इससे पहले तुम सामूहिक चेतना करो' और सामूहिक चेतना का कार्य शुरू हो गया, अनायास, सहज में! लेकिन उसकी जो समस्याएं हैं वो मुझे आपसे आज बतानी हैं।

बहुत आनन्द की चीज़ है कि सामूहिक चेतना हो गई और सब जगह लोग इतने ज्यादा मात्रा में, हर देश में, लोग सत्य को पा गए और उसमें ही आनन्द में हैं। लेकिन कष्ट तब होता है, ये सोच करके, कि सामूहिक चेतना में हमने कोई चयन नहीं किया; दरवाजा खोल दिया हर तरह से लोग अन्दर आ गए और अपने साथ अपनी गन्दगी भी लेकर अन्दर चले आए। और जब ऐसे थोड़े से भी लोग आ जाते हैं तो वो बहुत नुकसान देते हैं। नामदेव वगैरह तो बिल्कुल जो पहले बड़े साधु-सन्त हो गए, जो अपने ही लोग हैं, उन्होंने तो साफ-साफ कह दिया था कि जो कि बुरे हैं वो अच्छे हो ही नहीं सकते; उनकी आदतें ठीक हो ही नहीं सकतीं। उदाहरण के लिए उन्होंने कहा एक मक्खी लीजिए; मक्खी एक तो आपके खाने पर बैठेगी तो भी मार डालेगी और अगर कहीं मर गई और पेट में चली गई तो भी आप मर जाएंगे। ये मक्खी नहीं ठीक हो सकती। उन्होंने कहा कि ऐसे मक्खी वाले बहुत से लोग बहुत सा उनको गुड़ चिपकाने का शौक होता है और उसकी ओर दौड़ते ही रहते हैं। सो सहज में ये चीज़ें सब हमारी गिर

जानी चाहिए। जब तक ये गिरती नहीं तब तक हम ऊँचे उठ नहीं सकते। पंखों में अगर कोई चीज़ लग जाए तो पक्षी भी नहीं उड़ पाते। इसलिए जो ये आनन्द का आकाश है जिसे कि कवियों ने रागांचल कहा है-माँ के प्यार का आंचल- इसमें आप एक पक्षी की तरह उड़ नहीं सकते, क्योंकि आपके पंखों में भी कुछ न कुछ अभी लगा हुआ है।

आज का दिन शुभ दिन है और बहुत से लोग सोचते हैं कि बहुत बड़ा दिन है और इस दिन कोई विशेष कार्य हुआ; ऐसे लोगों ने कहा हुआ है। लेकिन आज के दिन एक विशेष कार्य आप लोगों को करना है। इतने सारे आपने गुब्बारे लगा रखे हैं, इससे इंसान खुश हो जाता है देखता है कि देखो रबड़ में भी कितनी शक्ति है कि वो हमें सुख और आनन्द दे सकता है, और वो भी एक बड़ी सौन्दर्यपूर्ण वस्तु बन सकता है। फिर हम तो मनुष्य हैं और मनुष्य में हम आज सहजयोगी हैं, पहुँचे हुए लोग हैं। सो इन लोगों की एक स्थिति आने के लिए क्या करना चाहिए ?

अभी मेरा एक अनुभव हुआ जो मैं आपको एक कथा के रूप में बताती हूँ। मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैं इसलिए ये सब हिन्दी में बोल रही हूँ क्योंकि ये ज्यादातर दोष हिन्दुस्तानियों में हैं। अंग्रेजों में इतना नहीं, परदेश में भी इतना नहीं। उन लोगों को इस की अक्ल भी कम है। हमारे देश में पहले ये हमारी भारत माता, पूरी सम्पूर्ण, इसमें अनेक तरह के देश समाए हुए थे। आप जानते हैं इसमें बर्मा था, सीलोन था, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि अनेक देश समाए हुए थे। ये हमारी माँ है 'भारत माता'। पर इसको लोगों ने काट-पीट लिया। किसलिए काटा-पीटा ? वो ऐसी बात हो जाती है कि जैसे कोई लोग इस देश में ऐसे हो गए जिन्होंने सोचा कि ये हमारे देश के लीडर हो गए, ये बड़े आदमी हो गए तो हम क्यों न कुछ ऐसा करें कि हम भी बड़े हो जाएं। ये अगर प्रधानमन्त्री हो सकते हैं तो हम भी प्रधानमन्त्री हो सकते हैं। ईर्ष्या, पहली चीज़, ईर्ष्या हो गई कि हमारा एक देश हो जाए, हम अगर विभाजन कर लें तो उतना हिस्सा हमको मिल जाएगा। उस पर हम राज-पाट करेंगे। जैसे बहुत से बड़े-बड़े परिवारों में ऐसा होता है कि लोग चाहते हैं हमारा अलग घर हो, हम अलग से रहें, हमारे बीवी-बच्चे हों, हम वहीं रहें और किसी से मतलब न रखें। तो विभाजन करने की एक प्रवृत्ति मनुष्य में है। और उसी के कारण, समझ लीजिए आप, बांग्लादेश बना तो मैं अभिभूत हो गई कि लोगों ने इतना सा बांगला देश माँगा ! और इसलिए कि कुछ लोग चाहते थे कि हमारा राज्य हो। आप इस्लाम का नाम लो या किसी भी धर्म के नाम पर कोई न कोई बहाने से विभाजन कर डाला और आज बांग्लादेश का ये हाल है कि हमें लोग कहते हैं माँ आप मत जाओ नहीं तो आप की आँखों से अविरल अश्रु धारा बहती रहेगी इतनी दुर्दशा है। पाकिस्तान का क्या हाल है ? सीलोन जिसको कि अब श्रीलंका कहते हैं उसका क्या हाल है ? ये जो तोड़-तोड़कर देश के इन्होंने अलग भाग बनाए और सोचा कि अब इसमें हम राज करेंगे, अधिकतर उनके प्रधानमन्त्री वगैरह को वहीं के लोगों ने मार डाला। उनका खून कर डाला। सो ईर्ष्या से ईर्ष्या बढ़ती है और फिर इसी तरह के समूह बन जाते हैं और फिर लड़ते हैं कि यह तो हमें चाहिए। अभी भी अपने यहाँ बहुत चला हुआ है विभाजन का विचार। जैसे हमारे यहाँ कहीं विदर्भ है तो कहीं झारखण्ड है। ये बनाने से क्या मिलेगा ? किसको क्या मिला है विभाजन से ? सहजयोग इसके बिल्कुल विरोध में है कि हम किसी चीज़ का विभाजन करें। हमको तो सबको जोड़ना है सहजयोग सारा समन्वय पर चलता है और अगर आपको समन्वय की कोई कल्पना नहीं है तो आप सहजयोग छोड़ जाएं वही अच्छा है।

अभी एक बहुत भारी वारदात हो गई कि एक साहब सहजयोग में थे वो सबके भूत निकालते थे। मैंने कहा

बन्द कीजिए, ये भूत आपको पकड़ेंगे। पर उनको शौक हो गया। हो सकता है लोग उनको पैसा देते हों या बहुत बड़ा आदमी कहते हों, जो भी हो। जो भी हो उन्होंने अपना एक अलग ग्रुप निकाल लिया। सहजयोग के भी कुछ ऐसे लोग थे वो भी अलग हो गए। एक अलग ग्रुप बनाकर उन्होंने एक अलग से संस्था निकाली। हाँ, मेरे बारे में उनको कहते शंका नहीं थी, लेकिन और जो लोग हैं और लीडर जो हैं, किसी काम के नहीं। कुछ उसके दोष, कुछ उसके दोष, कुछ सबके दोष निकाल कर उन्होंने कहा कि हम बड़े शुद्ध आचरण के लीडर हैं, और हम माँ के भक्त हैं। मुझसे बिना पूछे, मुझसे इजाजत लिए बिना, उन्होंने एक बड़ा ग्रुप बना लिया। मेरे फोटो खूब दिखाये दुनिया भर को। पता नहीं क्या धन्धा करते थे, मुझे तो पता ही नहीं कि क्या हो रहा था। और लीडरों को ये लीडर अच्छा नहीं वो लीडर अच्छा नहीं। अगर कोई खराब हो तो मैं खुद जान जाऊंगी। जब मुझे मानते हैं तो मुझ पर छोड़ देना चाहिए। मुझे तय कर लेने दीजिए कि लीडर अच्छा है या नहीं। लेकिन लीडर को तुम ऐसे हो, तुमने ये क्यों किया, तुम ऐसे क्यों करते हो? इसका अधिकार आपको नहीं है। अब कोई कहेगा लीडर क्यों है सहजयोग में। इसलिए है कि मेरा सम्बन्ध सबके साथ नहीं हो सकता, अगर बीच में एक इंसान रहे तो उसके माध्यम से मैं सबसे सम्बन्धित हो सकती हूँ। तो वो लीडर पर नाराज हो गए, ये लीडर ठीक नहीं, ये ऐसा है वैसा नहीं। उसका जो दोष हो, उसकी जो तकलीफ हो, उसको मुझे निकालना चाहिए न कि आपको। अगर आपको तकलीफ है तो आप मुझे लिखो। पर आप अगर ऐसे आदमी से कहें कि अच्छा अब आपको लीडर पसन्द नहीं है तो आप सहजयोग छोड़ दो, तो उसके साथ और ऐसे दस अधिकचरे सहजयोगी जुट जाएंगे और फिर उस लीडर के लिए ये काम करने लगेंगे। इसी तरह का एक बन गया। उसमें ७०-८० लोग इस तरह के इकट्ठे हो गए जिनकी मैंने कभी शक्ल नहीं देखी, जिनका कभी नाम नहीं सुना, मैं जानती नहीं कि ये सहजयोगी हैं। अब उन महाशय ने कह दिया कि मैं तो कल्कि का अवतार हूँ। चलो भई हो, मुझे कुछ नहीं कहना। हो जाओ और तुम सहज से हटो, बस, सहज में आपका कोई स्थान नहीं। इन लोगों ने उनको मान लिया कि ये कल्कि का अवतार है। उसी के ये लोग चरण छूने लगे थे, चरण छू महाराज, पैसा छू महाराज! सब तरह के महाराज होते हैं तभी ये बने। तो पैसे लिए इनसे। ये लोग जो दोष अपने लीडरों में दिखा रहे थे वही दोष उनके अन्दर थे। बहुत अच्छे से उनका प्रादुर्भाव हुआ और सब देखने लग गए कि ये क्या हैं? तो इस तरह की ईर्ष्या और महत्वाकांक्षा हो जाती है। लेकिन बेवकूफ जितने भी सहजयोगी थे छन कर उसमें चले गए। बड़ी कमाल की चीज़ है क्योंकि अन्तिम निर्णय है न। तो छन-छनकर ऐसे लोग इकट्ठे हो गए और लीडर का चरित्र अच्छा नहीं तो फलाना अच्छा नहीं, तो वो पैसा खाता है, ये है वो है। सी बी आई से बढ़कर। मैंने कहा भई हद हो गई, मुझसे पूछो तो मेरा प्रमाणपत्र तो लो। लेकिन हम माँ आपको तो मानते हैं लेकिन मैं जो कर रही हूँ उसको नहीं मानते। करते-करते ये बेवकूफ लोग गणपति पुले पहुँचे वहाँ इन्होंने मेरे ऊपर पत्थर फेंके, क्योंकि जब दुर्बुद्धि हो जाती है जब बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो आपको होश ही नहीं रहती कि आप बोल क्या रहे हैं कर क्या रहे हैं, जैसे शराबी आदमी हो जाता है उस तरह की हालत हो जाती है। और वहाँ पर उन्होंने हंगामा मचा दिया। प्रोग्राम में आ गए। मैंने देखा इतने खराब उनकी चैतन्य लहरियाँ, मैंने कहा बाप रे बाप ये सहजयोग में बैठने वाले हैं? अपनी चैतन्य लहरियाँ ठीक करने की जगह दूसरों के चैतन्य लहरियाँ ठीक कर रहे हैं। तो ऐसे जो लोग सहज में लोग हैं उनको सहज छोड़ ही देना चाहिए क्योंकि सहज वो हैं नहीं। लेकिन अगर एक-आध माई का लाल खड़ा हो गया तो उसकी दुम पकड़कर बहुत से लोग सोचते हैं कि वो स्वर्ग में चले जाएंगे। कैसे?

सहज एक सामूहिक कार्य है, एक सामूहिक संस्था। इसमें किसी का नाक उधर, तो आँख उधर, किसी का हाथ उधर। तो ये चलने ही नहीं वाला क्योंकि चैतन्य को ये बात पसन्द नहीं है। फिर मैंने कहा कि तुम बगावत कर रहे हो, तो कहने लगे, 'आप हमें गाली दे रहे हैं।' मैंने कहा, 'नहीं, मैं आपका वर्णन कर रही हूँ कि आप चैतन्य से बगावत मत करो।' इसीलिए वहाँ भूकम्प आ गया और अब आगे क्या होगा? एक माँ की दृष्टि से मैंने कहा कि, 'भई देखो, सत्य और परमात्मा जो है वो कोई तुमको क्षमा नहीं करेंगे, मैं तो माँ हूँ मेरी बात दूसरी है। वो तुमको नहीं छोड़ेंगे, तुम मेहरबानी करके सब धन्धे छोड़ कर दो।' लेकिन लागी नाहीं छूटे वही बात है। उसी चक्कर में वो फँसे हैं।

आजकल मैंने सुना है देहरादून में बड़े जोरों में ये काम हो रहा है। उधर झारखण्ड चल रहा है, इधर एक भूतखण्ड भी चल रहा है। अब अगर सहजयोग से इन दो-चार बदमाश लोगों को निकाल दिया जाए तो उनके साथ जुटने वाले भी बहुत से लोग हैं। और एक दूसरा ग्रुप बना लेंगे। पर उस ग्रुप के लिए मुझे हर्ज नहीं। कृपया चले जाएं और गंगा जी में डूब जाएं, मुझे उसमें कोई हर्ज नहीं। पर वो सहज में नहीं रह सकते और मेरा नाम नहीं ले सकते, मेरा फोटो नहीं लगा सकते। आज ये बात बड़ी दुखदाई लगी जब मैंने सुना कि जिस आदमी पर मेरा इतना विश्वास, जिसने इतना कार्य किया, उसी से कहने लगे, तुम ये मोटर कहाँ से ले आए? अरे भई वो काम करते हैं, धन्धा करते हैं, ये मुझे पूछना चाहिए और तुमको अगर कोई ऐसी खास शिकायत हो तो मुझे चिट्ठी लिखो। आज मुझे कहना नहीं था पर और कोई मौका नहीं था तो इस शुभ अवसर पर मुझे अशुभ बात कहनी पड़ी है। इस तरह के अगर धन्धे करने हैं तो अभी आप सहज से अपना आसन लेकर तशरीफ बाहर ले जाइये। उसमें मुझे कोई हर्ज नहीं। सहजयोग में किसी पर जबरदस्ती नहीं है, आप जानते हैं। मैंने तो कभी अपने घरवालों पर भी जबरदस्ती नहीं की कि तुम सहज करो। हालांकि मैं जानती हूँ कि इससे बढ़कर और कोई चीज़ नहीं है पर मैंने उनसे भी कभी नहीं कहा कि तुम सहज करो। करना हो तो करो नहीं तो मत करो, पर ऐसे धन्धे नहीं करना। इसका मतलब है आप कभी भी सहजयोगी नहीं हो सकते। एक तरह से सहज की दृष्टि से अपने लीडर से इस तरह से बर्ताव करना महापाप है और उसको लेकर ग्रुप बनाना तो उससे भी महापाप है। अगर आप लोग चाहें तो आप मुझे चिट्ठी लिखें मैं उस पर खबर करूंगी। मुझे तो चैतन्य पर फौरन पता चल जाता है कि वाकई में आप सच हैं कि वो और दुनिया भर की चीज़ें उसमें लिखते हैं। चिट्ठी भी आती है तो उसमें इतनी बकवास कि मैं उधर ध्यान ही नहीं देती। वो लीडर ऐसा है, वो लीडर ऐसा है। अरे आप कौन बड़े शुद्ध आत्मा हैं? आप अपने को तो देख लीजिए। देखना चाहिए। जब आप ही नहीं ठीक हैं तो आगे का क्या होगा? आपके बच्चे हैं और बच्चों के अलावा जो आपके आस-पास पड़ोसी आदि सब लोग रहते हैं, तो वो क्या सोचेंगे अगर आपका लीडर ऐसा है? तो क्या सोचेंगे आपके लिए भी? आप क्यों पीछे लगे हो? आपकी माताजी को अक्ल नहीं है, वो ऐसे लीडरों को चुनती हैं। इसी तरह की चीज़ें शुरु हो जाती हैं और सहजयोग खत्म हो जाता है। अभी तक तो कहीं इस तरह से खत्म नहीं हुआ। कोशिश हमने पूरी की थी कि डूबते हुआ को बचा ही लो। किसी तरह से बच जाएं तो अच्छा ही है। जितने सहजयोगी हों अच्छा है। मुझे ये भी लगता है कि सत्य पर बसा हुआ ये जो स्वर्ग है, स्वर्ग के जाने के लिए भी थोड़ी सी तैयारियाँ जरूरी हैं। और नहीं तो दूसरी बात ऐसी भी है कि वहाँ भी जगह कुछ कम होगी। तो नियति भी ऐसा कार्य कर रही है कि चलो ये फालतू

लोगों की काट-छाँट करो। लेकिन इस चक्कर में आपको आना नहीं चाहिए।

अगर आप वाकई जागृत हों तो अपने प्रति जागृत हों, दूसरों के प्रति नहीं। अपने प्रति जागृत होकर देखो कि हमारे अन्दर कौन सी कमी है। किसी को कोई चक्कर, किसी को पैसा कमाने का चक्कर है। अब सहजयोग में पैसा कमाने लोग आते हैं। अगर उनसे कहें कि भई आप यहाँ पैसा कमाने के लिए नहीं आए हैं तो ये बात उनकी खोपड़ी में नहीं घुसती। पैसे का चक्कर भी आज मुझे कहना पड़ेगा कि कुछ लोगों में कुछ अक्ल ही कम है। पहले ईसा ने कहा था कि 'पहला अन्तिम होगा और अन्तिम पहला' ऐसा कोई दिखता नहीं है। जो शुरु-शुरु में सहजयोगी हमारे बम्बई में आए थे तो वो कहने लगे, 'माँ कम से कम हमसे एक-एक हजार रुपए ले लो।' मैंने कहा, 'देखो बेटे, मुझे न तो पैसा गिनना आता है न ही मुझे रखना आता है, न ही मैं बैंक जानती हूँ। तो अपना अगर कोई बन जाए, जिसको कहना चाहिए, ट्रस्ट या कोई चीज, तब मैं फिर तुम लोगों से रुपए ले लूंगी।' इसलिए नहीं कि मुझे बड़ी ईमानदार बनना चाहिए, मुझे अक्ल ही नहीं है बेईमानी की, तो फिर किया क्या जाए? मुझे अगर गिनना ही नहीं आता पैसा तो मैं क्या करूँ? मुझे तो बैंक का चैक भी लिखना नहीं आता। वो तो छोड़ो हम बने ही कुछ और तरह से हैं। पर आप लोगो को ये सब आते हुए भी आप जानते हैं कि धर्म के नाम पर कोई अगर पैसा लेता है तो वह पछताएगा। पैसे का चक्कर बड़ा जबरदस्त है। तो इस बार हमने सोचा था कि बहुत बार हमने आपसे कहा भी, कि यहाँ की जो औरतें रास्ते में भीख माँगती हैं, बहुत सी मुसलमान औरतों को उनके पतियों ने छोड़ दिया है, वो रास्ते पर बच्चों को लेकर भीख माँगती हैं, और कहाँ-कहाँ से बाहर से, राजस्थान से, बिहार से औरतें यहाँ आई हुई हैं, इनका कुछ न कुछ भला करना चाहिए। इसलिए हमने एक संस्था बनाई है उसके लिए हमें पैसों की आपसे कोई जरूरत नहीं। हमने कभी किसी से भी पैसे के लिए नहीं कहा। हमारा इंतजाम हो जाता है। लेकिन मैंने सोचा कि आपको भी कुछ पुण्य मिले। तो मैंने कहा, 'पाँच सौ रुपए रख दो, एक सौ आठ के बजाए।' हो गया चिट्ठियों पर चिट्ठियाँ १०८ का ५०० कर दिया। अरे साल भर में आप को एक बार गर पैसा देना पड़े, कुछ पुण्य करने का ही नहीं क्या? सिर्फ लेने का है? फिर लक्ष्मी तत्त्व आपमें कैसे दिखाई देगा? लक्ष्मी तत्त्व में तो सिर्फ देना ही होता है। उस पाँच सौ के लिए लोग इतने पगला गए। पाँच सौ रुपए तो आप बाल कटाने के देते हैं नाई का कभी-कभी। ऐसी आफत मचा दी कि ५०० रुपए? मैं समझ गई कि लोग अभी अधकचरे हैं। पहले जमाने में इतनी बात नहीं थी। श्रद्धा और त्याग और त्याग की भावना ही नहीं आती थी, मज़ा आता था। तो ये जो बात है हमारे अन्दर, अब भी हमारा चित्त वो पैसे पर है, हम तो १०८ ही देंगे नहीं तो हम आएंगे ही नहीं। मत आओ, बड़ा अच्छा है। निकल ही जाओ सदा के लिए। वो अच्छा है। क्योंकि सहजयोग भिखारियों के लिए नहीं है। पहले आप लोग ठीक हो जाइए फिर भिखारियों की मदद करिए। हम भिखारियों की मदद करते हैं। उसके लिए अगर कहा गया कि थोड़े से पैसे दे दीजिए तो आप लोग इतने क्यों नाराज़ हो रहे हैं? मैं तो, आप जानते ही हैं पैसे को छूती भी नहीं। मेरे को मालूम ही नहीं है। लेकिन एक कार्य निकाला है, उसके लिए अगर कहा गया कि १०८ के बजाय ५०० दे दीजिए तो आप सारे लीडरों पर बिगड़ गए। सब पर बिगड़ गए और मार आफत मचा दी। 'माँ ये आपको किसने सलाह दी?' अरे मुझे मशवरा देने वाला अभी पैदा ही नहीं हुआ। मैं तो अपने ही दिमाग से चलती हूँ। ये समझ लेना चाहिए। ऊपर से मैं भोली-भाली लगती हूँ, लेकिन अन्दर से मैं बहुत चन्ट हूँ। इसलिए मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश नहीं

करना। अगर आप लोगों से जरा सा भी नहीं होता है सहजयोग के लिए देना, सालों बीत गए, हजारों लोगों को ठीक किया। इतने तो आप लोगों को बखशीश में पैसे दिए, क्या क्या किया। सब कुछ किया। आप जानते हैं। पर इतनी सी चीज़ के लिए लोगों की नजर बदल गई। मुझे बड़ा दुःख लगा इस बात पर। पहले भी ऐसे ही होते रहा है। कितनी क्षुद्रता है। अब बम्बई में इस बार सबने कहा कि 'माँ, आप यहीं पूजा कर लो,' तो मैंने कहा, 'भई पिछली मर्तबा का अनुभव बड़ा खराब हैं, जो पूजा हुई उसमें से एक चौथाई लोगों ने खाने के पैसे दिए, बाकी मैंने दिए पैसे।' पूजा मेरी हुई और खाने के पैसे भी मैंने दिए! बम्बई के लोग तो खास हैं। हमारे महाराष्ट्र के ऐसे कंजूस लोग हैं, वो ब्राह्मणों को देंगे, सिद्धि विनायक को देंगे, पर यहाँ मुफ्त में खाने को आ गए। एक चौथाई लोगों ने खाने का दिया, एक तिहाई ने पूजा का दिया। ग्यारह (११) रुपए और सहजयोग में आ गए। इससे अच्छा कटोरा लेकर कहीं मस्जिद के सामने बैठ जाएं, वो ज्यादा अच्छा है। वहीं कुछ अल्लाह उनका भला करे तो करे। ऐसे ऐसे लोग सहजयोग में हैं और इसलिए मुझे कहने का है कि आपसे मुझे किसी प्रकार का दान या पैसे की आज तक जरूरत नहीं पड़ी लेकिन मैंने कहा कि, जरा देखें, testing करके, उस testing में मैं हैरान हो गई और कोई भी ऐसा गरीब नहीं है इसमें जो ५०० भी नहीं दे सकता। फिर ये कहा गया, जो नहीं दे सकता नहीं दे, तो फोन पर फोन आ रहे हैं कि साहब मेरा नाम आप काट दीजिए। मैं नहीं दे सकती क्योंकि मेरे पति कमा रहे हैं। कितना कमाते हैं? सात हजार (७०००) कमाते हैं पर मैं नहीं दे सकती। मेरे पति दे देंगे। पर अपनी तरफ से मैं नहीं दे सकती। जरा कुछ सेल निकाल दीजिए, वो होता है ना marketing कुछ sale हो जाए तो अच्छा है। किस किस को माफ करें। अरे भई कितना पैसा आने वाला है उससे क्या हमारा (गैर सरकारी धर्मार्थ संस्था) चलने वाला है? कुछ भी नहीं। पर आप लोगों की परीक्षा हो गई। आप लोग कितने गहरे पानी में हैं?

पैसे के अन्दर से पहले चित्त निकालना हिन्दुस्तान के आदमी के लिए बहुत जरूरी है, अगर वो सहजयोग में है, नहीं तो आजकल जेल भरो आन्दोलन चला ही हुआ है। पैसों में काहे को आपका इतना चित्त है? आपकी लक्ष्मी जी हमने जागृत कर दी। जितना आप दोगे, उतना ही आपको मिलेगा। देना इतने आनन्द की चीज़ है जिसकी कोई हद नहीं। आप लोग मुझे कुछ देते हैं तो मैं तो इसलिए सिर्फ लेती हूँ कि आप लोग खुश होते हैं। मुझे किसी चीज़ की जरूरत नहीं। मेरे घर में कोई जगह नहीं है। मेरे घर कुछ रखने की जगह नहीं है। मैं कुछ नहीं कर सकती। पर आप मुझे देते हैं प्यार से और आप उससे खुश होते हैं। लड़ाई-झगड़ा करके मैं हार गई कि मुझे आप साड़ी मत दो, मुझे कुछ नहीं चाहिए, मुझे जेवर नहीं दो। मैंने यहाँ तक कह दिया मैं सब जेवर बेचने वाली हूँ। उसी से सारे काम हो जाएंगे। तो कहने लगे माँ आपको जो करना है करो, पर हम तो देंगे ही। ये आप की खुशी के लिए हम लेते हैं। हमें क्या लेना और क्या देना? कुछ लिया ही नहीं तो देना क्या? लेकिन ये एक चीज़ हमारे अन्दर हिन्दुस्तानियों को समझनी चाहिए। हमने तो ऐसे लोग देखे हैं कि आपको आश्चर्य होगा, सिर्फ स्वतन्त्रता कमाने के लिए हमारे ही पिताजी के घर से सारी जमीन जायदाद सब बेच दिया। माँ ने हमारे सब जेवर बेच दिए, सब जेल में गए। मुझे तो बिजली के झटके लगाए गए और बर्फ पर लिटाया। मुझे कुछ नहीं होता था। सब मजाक था लेकिन तो भी सब तरह की चीज़ें लोगों ने सहन की। दो-दो-तीन-तीन साल जेल में रहे और अब जेल में जा रहे हैं इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन इस वजह से कि पैसे खाए हैं। वो कहेंगे हम भी जेल में गए। जिन लोगों ने सहजयोग में

बहुत बदतमीजी करी है उनका हम छुटकारा करने वाले हैं, पक्की बात है। खबरदार किसी लीडर के खिलाफ किसी ने भी अगर आवाज उठाई तो उसको हम सहजयोग से छुट्टी कर देंगे। पूरी तरह से जान लें, इसमें शक नहीं है क्योंकि हमें तोड़ना नहीं है। आपका स्वार्थ है, आपका मतलब है, आपको और कोई धन्धा नहीं है तो पुलिस में भर्ती हो जाओ, सी.आय.डी बन जाओ। कुछ भी करो। सहज में क्यों आप आए। सहज के लायक ही नहीं हैं आप। आप आए कैसे सहज में?

आज के दिन ये सारी बातें करने की मैंने बड़ी धृष्टता की और मैं जब सो गई थी तभी मेरे मन में ये खयाल आया कि आज क्या कहा जाएगा। ७४ साल की उम्र का बूढ़ा क्या कहे। बूढ़े लोगों का एक ही काम होता है कि अपने बच्चों को नसीहत दें। उनको भी कहें कि जिन्दगी क्या है और आप किसलिए सहज में हैं। सहज में आप अपना सर्वनाश करने के लिए नहीं आए क्योंकि सहज की अति सांकरी गली कही जाएगी। इस तरह की है, अगर आपको आना है तो ये पता रखना चाहिए कि आप को इस सांकरी गली से चलना है जिसमें एक तरफ तो पहाड़ हैं एक तरफ खाई है। सो इसमें चढ़ने के लिए अगर आप के अन्दर वो मन का बल, वो शक्ति, वो पावित्र्य, शुद्ध इच्छा नहीं हो। तो होगा नहीं, आप आधे-अधूरे ही बैठ जाएंगे। ये पहाड़ी पर, जो आपने देखा है, गधे पर बैठ कर लोग चढ़ते हैं। वो गधे से पूछा कि भई कि तुम कैसे गधे हो गए? तो उसने कहा कि हम भी आप ही लोगों जैसे थे, लेकिन आधे-अधूरे रह गए तो भगवान ने हमको गधा बना दिया कि कम से कम गधे के रूप में ऊपर पहुँच जाओ। ये सब कथाएँ आपने सुनी हैं, पढ़ी हैं। हमारे देश में तो इसका भंडार है। इसके वाङ्मय का भंडार है। इतनी कथाएं हो गई, वो ज्यादातर हमारे उपदेश के लिए हैं, समझाने के लिए थी कि गलत रास्ते पर चलने से क्या होता है। दुनिया भर की कथाएं हो गई हैं और उसमें से जो कथा हमें कुछ न कुछ सबक देती है वही कथा असली है। सो बार-बार मुझे लग रहा है कि आज के दिन मुझे कुछ अच्छा कहना चाहिए था लेकिन ये बात मेरे सामने इतने जोरों में खड़ी हो गई, इस शिव पूजा में, कि मैंने सोचा अगर मैं नहीं कहूँगी तो कैसे होगा और शिवजी की पूजा में आप कह भी नहीं सकते क्योंकि शिवजी तो सिर्फ क्षमा ही करते हैं पर वो भी किसी हद तक और जब वो बिगड़ते हैं तो, आप जानते हैं, वो क्या करते हैं। उनसे मुझे सबसे ज्यादा डर लगता है क्योंकि ये अगर घोड़ा बिगड़ गया तो वो आपको ठिकाने लगा देंगे।

सहजयोग का ज्ञान सारा आपको एक तरह से मुफ्त है क्योंकि पूर्व जन्म बहुत बड़ा था। पूर्व जन्म की आपके अन्दर जो सम्पत्ति है उसके बूते पर आपने ये पाया। लेकिन सहज में आकर के, सब पाकर के, सम्पत्ति पाकर के और आप अगर बेकार ही जाने वाले हैं तो बेहतर है इसको छोड़ दो और हमें भी बख़्शो। सोच-सोचकर के आज कहा, वैसे में सोचती कम हूँ, निर्विचार ही में हूँ लेकिन तो भी, मुझे चिन्ता इसलिए है कि मैंने आपको अपना बेटा माना, आपको अपनी बेटी माना तो आपके जो दोष हैं उसके कारण जब आप मिटते जाएं, मुझसे देखा नहीं गया। मुझे बहुत कष्ट हुआ। सहजयोग में सब है आनन्द, शान्ति। आपके प्रश्न चुटकी बजाते ही ऐसे ठीक हो जाते हैं, आप लोग जानते हैं, आपको अनुभव है। मुझे कोई खास बताने की जरूरत नहीं है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

ORIGINAL TRANSCRIPT

ENGLISH TALK

I have to tell you thank you very much for this celebration, for all these beautiful balloons; but, looking at these balloons, we have to also see some of them who have lost their air completely. This is another problem we face in the West because to have ego itself, according to the Western culture, is a very great achievement. And when we start living with our ego I know how one looks like. He really looks like a stupid fellow. When he talks, when he describes himself, you don't know where to look because just feel like laughing at his stupidity. Ego is the outcome of stupidity. I don't know what to say; how to give a simile to ego, because it's just bloated and makes you float in the air, and when it bursts you are down on the earth. But you are not down on the earth the way Sahaja Yogis should be down to earth; but you are completely finished. All your arrogance goes to waste.

You can never understand Sahaja Yoga if you have this ego in your head. I have known people who have this ego. They have come to Sahaja Yoga and still they want to think that they know more than anybody else. To know about yourself you have to go deep down, and to go deep down you have to give up all this idea which makes you float in the air. Imagine if you have a big balloon attached to you. How can you go deep down into the sea? You cannot. That kind of a air which makes you float in the air, absolutely in an area of stupidity, what else - I mean English you will think there are no words - stupidity means everything. Then you may think no end of yourself. You may think whatever you like, you can behave the way you like and all that but what do you achieve? You achieve nothing out of it. Whatever you achieve people are jealous of you. They want to harm you. You have no friends. Nobody cares for you, and in Sahaja Yoga people know who has got this problem. So, I've seen people when they start talking they say, "Ah! We know, we know him."

Once I had an experience, long, long time back in Pune where the people who were owning that wada said that we cannot have Shri Mataji's program because She is not a Brahmin. So the Sahaja Yogis said, all right we'll give it in the newspaper because She is not a Brahmin we cannot have a program. So, these people came to My program and the owner of that was sitting on the gallery on top. He couldn't even walk. He was suffering from some sort of a funny disease. So these people suddenly start. I didn't know. They didn't tell Me anything. They didn't tell Me that these people have protested or whatever it is. So they all started shaking like this, like this, like this. I said, "What is this?"

So I said, "What is it?"

They said "Mother, stop it. We know You are Shakti but stop it. It's too much, too much."

"But what did you do?"

They said, "We didn't do anything. We just said this is a Brahmin's thing and a Brahmin's wada, and this area is mostly resided by Brahmins, so we thought that You cannot have your program."

said, "Really, that's all?"

"Yes, yes, that's all. But it's, you see on the other side, you see those people? They are also shaking with Your power."

So I asked them, "Who are you? Are you also Brahmins?"

They said, "No, no. We are certified mad people from Thana."

"And how are you here?"

They said, "There was one fellow who was mad was cured by You."

"Really?"

“So our superintendent is here. He has brought us here. We are certified mad. Certified.”

My goodness, these people looked at Me. I said, “See now, you tally. You are shaking and they are shaking. Now you tally. Where are you?” And they all became Sahaja Yogis. Not only that but the gentleman sitting upstairs I told him, “You get up and come down.” He came and since that day he has surrendered his life and did a lot of work in Pune.

So what I'm saying that anybody who talks like that; that “This is wrong, in Sahaja Yoga, this should not happen, we should not have paid so much, or this leader is not good”; should take a paper, thin paper, on his hand, and put it before the photograph. If you can stop the shaking then you are all right. All of you can try this. Then try on the right hand. Very practical. If the paper is shaking that means Mr. Ego is shaking, and you know how to treat your ego in Sahaja Yoga, thanks to Mohammed Sahib. He has told us how to treat it.

Now these two problems are within us. One of them is our conditioning and another is this ego business, and we make our mind out of that and we are playing under the governance of these two things which we have used to make this mind. Now you have to be careful. You find out with left hand. Now let's see. If the left hand is shaking then you are conditioned. If the right hand is shaking then you are egoistical. So now you treat it. You treat these two things. Before Me you'll get vibrations all right because you see I am your Mother. All right. But that doesn't mean you are all right. You try on My photograph; that's much more sharp. So being Mother you know I play around. I think, I don't know what I should say, but maybe you may not feel that way. But before the photograph you put on the left hand side a newspaper or a little paper or a thin paper. On the right hand side another paper. One by one you try and judge yourself, what are you? After all you have not come here in Sahaja Yoga to emancipate Me. You have come here to evolve yourself and because of that you have to face yourself and see for yourself what is within you which is very strong, which is troublesome, which is dragging you down, which is killing.

Sahaja Yoga is nothing but Ocean of Joy. I thought that in My absence you'll be all enjoying it all right; you do. Airport I have seen sometimes I am late because of the plane, about four hours, five hours, and everybody is so fresh, and so nice early in the morning. I said, “What's happened?” “The whole night we have been enjoying Mother.”

So what you enjoy in that is collectivity: Sangat That collectivity you should enjoy only by getting rid of your nonsensical boundaries that you have built, and then you see the joy. All the time you'll be floating in joy. There is a sense which people have which you may not have before realization. Some of the people, I was amazed how deep they are, how they took to Sahaja Yoga. Supposed to be very great men. Supposed to be people of very great principles but very hot-tempered, intolerant about people, and they take to Sahaja Yoga just like this because inside there's a big depth, so that everything is absorbed without any problem. Everybody can achieve but one has to be careful as to the two wheels of our mind. One is the ego, another is the conditioning. All kinds of conditionings are there, especially in India. In the West it is all kinds of egos you know, different, different types. I have seen so many types and varieties of egos, I was surprised; to face that. I didn't know what to say. It's a very, very subtle thing which people have carved out of their minds.

So for you today it is to be decided that you are only still small children, and like small children you must have a very clean heart to accept, to absorb the beauty of peace that is within you; and also the beauty of purity. Without purity you cannot enjoy anything. So in Sahaja Yoga though we have so many people I must say the purity of these few saints, who lived earlier, we have to yet achieve. For example, yesterday they were singing about Ali. I was so very happy because He was an Incarnation. And His purity people are singing now; not at that time. He was killed at that time, He was tortured. That always they do.

Then we have many others. We have here Dam Dam Sahib. See what a great thing to come to. We have here Nizamuddin Auliya. We have so many people in our country itself that nobody, no other country can claim. They have one, say in England they have William Blake or this and that. We had so

many people. Why? Not because we were very good people, but because we were to be improved. Things had to be done. So they were born. Though this is a Yoga Bhoomi anywhere you go in India, I was surprised, in Haryana so many great saints lived there. But they were all tortured, troubled, never understood. It was so painful and hurts you how this stupid, ignorant, blind people tortured them.

So now it is our duty of Sahaja Yogis to, first of all, find out who is a saint. Even among Sahaja Yogis, as I described in Hindi language, there are people who try to trouble, trouble others. If you have no recognition and understanding of what is the truth, what is love, what is pure compassion, then you are not a Sahaja Yogi. It's like an obtuse angle you see, you have. You look at a person with an obtuse angle you don't see anything, one-sided. Now, at this juncture when I am so very old now; I have to request that you turn your eyes to yourself. Introspect. Because among you there are some people who will try to divert your attention, will try to say things. Very easy to say, "He is very dishonest, he is very immoral"; very easy to say. What are you?

We have to now understand that Sahaja Yoga is to be consolidated through synthesis. We are believers of synthesis. Any divisive thing that comes into your mind you should just throw it away. This is a request on this day I make you - that you please introspect. Unless and until you introspect you cannot even respect yourself. You cannot even love yourself. If you love yourself you will introspect and find out what's wrong. Supposing I love this sari, then if I find any doubt about it or see any dot somewhere or something I'll get it cleaned. I'll not be proud of it, wear it and go round saying, "Ah! See I've got so many spots." In the same way, you should be not proud of whatever asahaj temperaments you have within yourself. And don't talk like that. Christ has called them 'murmuring souls'. He said, "Beware of the murmuring souls". I would say: "Throw away all the murmuring souls". That's the only way. In Hindi as they say 'bakwas'; their name is bakwas; means the ones who just chatter, chatter, chatter; talk all nonsense about others. He doesn't know what he is. It is much more in India, I must confess. I'm sorry, though I'm an Indian. It is a habit of talking ill of others, sitting down just chit-chatting. They will not talk of Sahaja Yoga. How many people know Sahaja Yoga in the proper way? I mean if I have to give degrees, what degrees I should give to you? Tell Me. You don't know even about your vibrations. Of course you are Sahaja Yogis because you have fallen into this trap of achieving evolution. But how many are really grown up into it? You can.

So I have to again and again tell you, to make Me happy, you have to give up all these nonsensical, cheapish talks; but try to understand from each other what we know of Sahaja Yoga. Discuss it and contribute to this knowledge by describing your experiences of Sahaja Yoga. There are many who do it. I am not saying they don't do. But even there's one bad fellow he can spoil all of them; like one bad apple can spoil all the apples. So what do we do - throw away the apple out of the basket.

It is important see, even I feel all this, standing like a witness to you, silent witness. When I see big, big mountains, and I think they are like great saints who are watching, and they are trying to record what is happening in this world because they also understand. They also know. I have to again, and again, tell you that today is the day to see your own self, your own chakras, your own - I should say - defects. That will give you permanently the joy that is promised. You will get thoughtless awareness. Also you'll get doubtless awareness. But never get into the trap of your conditioning and of your ego.

This is what I have to tell you today, on this day where you are celebrating, that you celebrate your own birthday. Celebrate it. See for yourself what you have achieved and what you are going to achieve. It's time for you to celebrate than to celebrate My birthday. I'll be very happy to celebrate your birthday than to celebrate Mine.

So may God bless you.

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from English Divine Cool Breeze

When the whole world sleeps a Sahaj Yogi is awake and when the world is awake a Sahaj Yogi sleeps. This means that those things towards which a Sahaj Yogi is inclined, other people are not inclined. They are inclined towards other things. In some way or the other they are disinclined (vimukh) from the truth. Someone is caught up with money, someone with power, they are caught up with one thing or another and are completely lost; away from the truth. They cannot see the truth. Someone will say this is the reason, someone will say that is the reason, some explanation or the other.

However I think, God knows what all a man does in his ignorance. A sort of darkness envelops. Like for example, if this place is plunged into darkness, God knows there might be a stampede, people may fall, get trampled over, anything can happen. When we are in this darkness we are asleep. But when we are awake, when our Kundalini is awakened and when we are confronted with the truth, nobody can explain the beauty of truth.

I asked somebody what did you get out of Sahaj Yoga? He said, "I can't tell you what I got but I have got everything." What does everything mean? I will also say that today, in Sahaj I have got everything. When I was small, I used to tell My father that it is My desire that like the stars in the sky, many people on earth should also shine and spread the light of God. He said, it is possible, you find a method for en-masse awakening; don't give lectures, don't write anything or else you will have a second Bible, a second Qoran and there will be a thing to fight about. So, before this there should be en masse awakening and the task of en masse awakening has started in Sahaj. But, the problems of this, I have to discuss with you to day.

It is a thing of great pleasure that there has been en masse awakening and everywhere people, in such great numbers, have found out the truth and in that bliss, we have not been selective. We opened the door and all sorts of people entered and brought their dirt with them. When even a few people like this come they cause a lot of damage. Saints like Namadeva had said very clearly that those who are bad can never become good. Their habits can never become good. He said, for example, if a fly sits on your food, it will make you sick and if it dies and you eat it, you will die too. This fly cannot become alright and like this fly a lot of people are very fond of jaggery and they keep running towards it. In Sahaj all these things should drop off. Until they drop off we cannot ascend. If something gets stuck to the wings of the bird, it cannot fly. This is why this sky of bliss which he has called "Raganchal"—the Mother's love, in this you cannot fly like a bird

should leave things to Me. Let Me decide if a leader is good or not. But to say why has this leader done this, why is he like that, you do not have the authority to say that. Now someone will say why are there leaders in Sahaj Yoga? They are there because it is not possible for me to associate with everyone, so if there is a person in between, through him I can associate with everyone. So, they got angry with the leaders. If there is something wrong with the leaders, I should correct it, not you. What you should do is to write to Me. But if you do not like your leaders you should leave Sahaj Yoga. With them 10 more half baked Sahaj Yogis will latch on and then trouble the leader.

In the same manner, a group was formed and about 70-80 Sahaj Yogis whom I had never seen or heard of before, joined them. Then that person said, I am an incarnation of Kalki. Alight, if you are, so be it, I have nothing to say. But keep away from Sahaj Yoga. There is no place for you in Sahaj Yoga. These people believed that he was an incarnation of Kalki and started touching his feet and all that—these are “charanchhoo maharaj”, “Paisa Le Maharaj”, that is why they become so. When they took money, all the faults they were pointing out in the leaders, the same faults were apparent in them and everybody started wondering what was going on? So this sort of jealousy and ambition takes place. But all the foolish Sahaj Yogis got strained into that—since it is the last judgement. About the leaders, that his character is not right, that he misappropriates money, he is like this, like that, more than the CBI. I was surprised. Atleast consult Me. They say well Mother we believe in you, but what I say atleast believe in that. Then these people reached Ganapatipule and threw stones at me because when one loses one's mind, one is not aware of what one is doing or saying, like a drunkard. And there they created a scene, came into my programme. I felt such bad vibrations. I said are these people in Sahaj Yoga? Instead of improving their own vibrations they were checking other people's vibrations. So such people should leave Sahaj Yoga. Now if such a person stands up, many people follow him, thinking he will lead them to heaven. This is not so. Sahaj is a collective movement. Here if somebody's ear is here, nose is here, hand is here—it's just not going to work out because the Chaitanya does not like this. Then I said “you are rebelling”, they said, “you are abusing us?” I said, “I am just describing you that don't rebel against the Chaitanya.” This is why there was an earthquake there. As a Mother I told them that the truth and God will not spare you, I am after all a Mother, you please leave all this. But they are still caught up.

In Sahaj Yoga there is no compulsion. I have never even forced the people of my family to take to Sahaj Yoga, although I know that there is nothing greater than this. If you want to take to this, do so, if you don't want to, then it is your wish, but don't do these kind of things. This means you can never be a Sahaj Yogi. In a way, from a Sahaj point of view, to behave like this towards your leaders is a sin and to form groups on this basis is a greater sin. If you want, you can write to me,

I will find out. In fact I know immediately through vibrations, whether you are right or they. They write all kinds of things in their letters. When they write it's so nonsensical, I don't bother. That leader is like that, that one is like that. Are you yourselves a very great soul? Look at yourself, if you are not alright, then what will happen in future? You have children and besides the people around you, what will they think? These kinds of things start and Sahaj Yoga finishes. Till now it has not finished anywhere. We have always tried to save all those who are drowning, the more Sahaj Yogis we have the better. But I also feel that this is a heaven based on truth and to go to this heaven also some preparations are necessary. And if not then there must be shortage of space, so destiny must be doing this job of pushing out the useless people. But you should not get into all this if you are aware, be aware of yourself, not of others and find out what is wrong with you. Somebody is caught up with something like money, people come to Sahaj to earn money. If you tell them that you are not here to earn money, it cannot enter their brains.

I will also have to tell you today that in the money game, people have very little brain. Christ had said that first will be the last and the last will be first. But I don't see any such thing. In the beginning the Sahaj Yogis who came to Bombay, they said Mother atleast take a thousand rupees from each one of us. I said children, I neither know how to count money or how to keep it nor do I know any banking. But if you form a trust, then I will put your money in that. Not that I want to be very honest, but because I have no brains to be dishonest. If I don't know how to count money, what should I do? I don't even know how to write a cheque. But you people know that if anyone takes money in the name of religion he can not escape punishment. This money game is very dangerous. So, this time I thought that lots of women who beg on the roads, a lot of Muslim women too, who have been abandoned by their husbands, who take their children with them and beg on the roads and a lot of women who come from Bihar and Rajasthan, we should do some good to them, so we formed an organisation. For this we don't need any money from you people. We have never asked you for any money, it all gets arranged but I thought that you should also receive some blessings, so I said OK, donate Rs. 500 for the cause. But so much fuss was made on it. Mother, who suggested you to decide like that? I received so many letters and phone calls complaining about it.

There is nobody who can suggest anything to me. I go according to my will. This you should understand. I look very simple but actually I am very clever! So you should not try to befool me, and you people cannot even do this much for Sahaj Yoga? For so many years I cured so many, gave away so much money, did what all you know, but for such a small thing so many people complained! I felt very sad. Earlier also such a thing has happened, such a lowly behaviour. First Indians especially should take their attention off money to grow in Sahaj Yoga, otherwise there is

a 'jail bharo andolan' going on. Why is your attention so much on money when I have awakened your Lakshmi. How much you give that much you shall receive. To give is so joyful I cannot tell you. When you give Me something I only take it to make you feel happy. I don't need anything. There is no place in My house to keep anything. You give it out of so much love, I am tired of fighting with you people, of saying don't give me sarees, I don't need anything, I don't need jewellery. I even said I am going to sell all the jewellery, all the jobs will be done by that. They said do whatever You want but we will give You anyway. I am doing it for your joy. I don't want any give and take. When I have not taken I needn't give. But this is something we Indians must learn.

I have met such people, you will be surprised, to gain independence, my father sold all the land my mother sold all her jewellery and went to jail. They gave Me electric shocks and made Me lie on ice. Nothing happened to Me, it was a joke but still all kinds of things people tolerated and went to jail for 2-3 years. They are still going to jail, there is no doubt, but that's because they have eaten money. They claim we also went to jail! Those people who have misbehaved in Sahaj Yoga are going to be turned out for sure and if anyone dares to voice against any leader in Sahaj Yoga, we will turn him out. Know that fully, because we do not want to divide. If you are selfish, you don't have any job, join the police or CID. Do anything, why have you come to Sahaj, when you are not worth it.

I know it was not fair on my part to talk of all this today. When I went to sleep I thought, what should I say today? I am 74 years old, what should I say now? So old people also have only one job, to guide their children, to tell them what life is all about and why they have come to Sahaj. In Sahaj you have not come to destroy yourself because Sahaj is an extremely narrow path. If you have to come to Sahaj you should know that you have to tread on this narrow path, on one side of which is a mountain and on the other a ditch. So to ascend this, if you do not have that determination, that wisdom and that pure desire, it will not work out, you will be stuck somewhere in between. On the mountains you have seen people sit on donkeys and go up. Somebody asked them how did you become donkeys? So they said, we were also like you but since we were half baked that God made us donkeys, so that in this form we will make it to the top. These stories you have heard, read, our country abounds in them, mostly they were written to teach us and those stories which have a moral, those are the ones which are real.

The knowledge of Sahaj Yoga for you is in a way free. You have received it because of the punyas of your previous lives. However, after coming into Sahaj and gaining all this if you are going to be of no use, it is better you leave it and relieve me. Also, I have been thinking a lot about this, although I do not think much, I am generally in Nirvichara, I am worried because I consider you as my children and so if due to your faults you are falling, I cannot bear it. It pains me. In Sahaj Yoga there is every thing; bliss, peace, all your questions disappear in a snap of the fingers. You know it, you have experienced it, I don't have to explain it to you especially.

HINDI TRANSLATION

(English Talk)

अभी तक मैं भारतीय सहजयोगियों के लिए बोल रही थी। मेरा जन्मोत्सव मनाने के लिए आप सबको बहुत बहुत धन्यवाद। आपने अत्यन्त सुन्दर गुब्बारे लगाए हैं। इनको देखते हुए हम पाते हैं कि इनमे से बहुत से गुब्बारों की हवा निकल गई है। पश्चिमी देशों में ये एक समस्या है जो हमारे सामने खड़ी है। क्योंकि पश्चिमी संस्कृति के अनुसार अहं का होना भी महान उपलब्धि है और अहंग्रस्त जब हम होते हैं तो, मैं जानती हूँ, व्यक्ति कैसा लगता है। जब वह अपने विषय में बात करता है, अपना गुणगान करता है तो वह अत्यन्त मूर्ख प्रतीत होता है। आपकी समझ में नहीं आता कि किस ओर देखें, क्योंकि उसकी मूर्खता पर हँसने को आपका मन करता है। अहं मूर्खता की ही देन है। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ, अहं के लिए कौन सी उपमा दूँ, क्योंकि यह गुब्बारा तो बस फूला हुआ है और आपको भी हवा में उड़ाता है। परन्तु जब यह फटता है तो आप धड़ाम से पृथ्वी पर गिरते हैं। एक सहजयोगी की तरह पृथ्वी पर नहीं आते, बिल्कुल समाप्त हो जाते हैं। आपका सारा घमण्ड व्यर्थ हो जाता है। आपकी खोपड़ी यदि घमण्ड से परिपूर्ण है तो आप कभी सहजयोग को नहीं समझ सकते। अहंग्रस्त लोगों को मैं जानती हूँ, वे सहजयोग में आए और अब भी वे सोचना चाहते हैं कि वे अन्य लोगों से कहीं अधिक जानते हैं। आत्मा के विषय में जानने के लिए आपको गहनता में उतरना होगा और गहनता में उतरने के लिए वे सब विचार त्यागने होंगे जो आपको हवा में उड़ाते हैं। कल्पना करें कि एक बहुत बड़ा गुब्बारा आपके साथ बंधा हुआ है, तो आप समुद्र की गहनता में किस प्रकार उतर सकते हैं? नहीं उतर सकते। इस प्रकार का अहं आपको हवा में उड़ा देता है, पूर्ण मूर्खता के क्षेत्र में। अंग्रेजी भाषा में शब्द Stupidity सारा अर्थ बता देता है। तब आप स्वयं को अनन्त मान बैठते हैं और मनमाने ढंग से आचरण करते हैं। परन्तु ऐसा करके आपको मिलता क्या है? इससे आपको कुछ नहीं प्राप्त होता। आपकी उपलब्धियों के कारण लोग आपसे ईर्ष्या करते हैं, आपको हानि पहुँचाना चाहते हैं, आपका कोई मित्र नहीं बनता, कोई आपकी चिन्ता नहीं करता। सहजयोग में लोग जानते हैं कि किस व्यक्ति को अहं की समस्या है। ऐसे व्यक्ति के विषय में बातें करते हुए मैंने कुछ लोगों को सुना है, वे कहते हैं, हाँ, हम उसे जानते हैं, भली-भाँति जानते हैं।

बहुत समय पूर्व एक बार पुणे में मुझे एक अनुभव हुआ। सभागार के मालिकों ने वहाँ कार्यक्रम की आज्ञा देने से इन्कार कर दिया क्योंकि श्रीमाताजी ब्राह्मण नहीं हैं। तो सहजयोगियों ने कहा कि ठीक है हम अखबारों में छपवा देते हैं कि क्योंकि श्रीमाताजी ब्राह्मण नहीं हैं हम उनका कार्यक्रम करने में असमर्थ हैं। घबराकर वे मान गए और मेरे कार्यक्रम में आए। सभागार का मालिक ऊपर गैलरी में बैठा हुआ था उसे कोई अजीब रोग था जिसके कारण वह चल भी नहीं पाता था। सहजयोगियों ने एकदम प्रोग्राम आरंभ किया, इन्होंने मुझे बताया भी न था कि सभागार के मालिकों ने कार्यक्रम का विरोध किया था। मेरे सामने बैठते ही ये मालिक थर-थर काँपने लगे। ओह माँ! मैंने कहा, 'ये सब क्या है?' वे कहने लगे कि, 'हमने कुछ नहीं किया, हमने तो केवल इतना कहा था कि ये ब्राह्मणों का बाड़ा है और क्योंकि इस क्षेत्र में अधिकतर ब्राह्मण रहते हैं इसलिए आप यहाँ अपना कार्यक्रम नहीं कर सकते।' मैंने कहा

‘सच, इतना ही कहा आपने?’ ‘हाँ इतना ही।’ वे कहने लगे कि, ‘उधर देखें, आपकी शक्ति से वे लोग भी काँप रहे हैं।’ मैंने उन लोगों से पूछा कि, ‘वे कौन हैं। क्या आप भी ब्राह्मण हैं?’ वे कहने लगे, ‘नहीं, हम ठाणे से आए प्रमाणित पागल हैं।’ मैंने कहा कि, ‘आप यहाँ कैसे आ गए?’ वे कहने लगे कि, ‘एक पागल व्यक्ति को आपने ठीक कर दिया था अतः हमारा सुपरिटेण्डेन्ट हमें यहाँ ले आया है, हम प्रमाणित पागल हैं।’ इन लोगों ने मेरी ओर देखा। मैंने कहा, ‘अब आप मुकाबला करें, आप भी काँप रहे हैं और वे भी काँप रहे हैं; अब देखें कि आपकी स्थिति क्या है!’ वे सब सहजयोगी बन गए। इतना ही नहीं ऊपर बैठे महाशय को मैंने आने को कहा। वह नीचे आया और उस दिन से अपना जीवन मुझे समर्पित कर दिया। उसने पुणे में बहुत सा काम भी किया। तो मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि जो भी व्यक्ति इस प्रकार की बात करता है कि सहजयोग में यह गलती है, ऐसा नहीं होना चाहिए, हमें इतने पैसे नहीं देने चाहिए थे, यह अगुआ अच्छा नहीं है आदि, तो ऐसे व्यक्ति को चाहिए कि एक पतला कागज अपने हाथ पर रखकर हाथ मेरे फोटोग्राफ की तरफ फैला ले। यदि हाथ के कंपन को आप रोक सकें तो आप ठीक हैं। आप सब इसे आजमा सकते हैं, दोनों हाथों पर कागज रखकर आप इसे आजमायें। यदि दाएं हाथ पर कागज में कंपन है तो इसका अर्थ है कि श्रीमान अहं काँप रहे हैं और आप जानते हैं कि आपने सहजयोग में इसका इलाज किस प्रकार करना है। मोहम्मद साहब का धन्यवाद कि उन्होंने इसका इलाज करने की विधि हमें बताई।

हमारे अन्दर दो समस्याएं हैं, एक तो हमारे बंधन हैं और दूसरा हमारा अहं और अपने मन की सृष्टि हम इन्हीं दोनों से करते हैं, और इन्हीं दोनों के प्रभाव में हम खेलते हैं। अब आपको सावधान होना है। पहले अपने बाएं हाथ से देखें यदि बायें हाथ का कागज कांप रहा है तो आप बंधनग्रस्त हैं और यदि दायां हाथ कांप रहा है तो आप अहंकारी हैं। अब इनका इलाज करें, इन दोनों बाधाओं का इलाज करें। मेरे सम्मुख आपको चैतन्य लहरियाँ आएंगी क्योंकि मैं आपकी माँ हूँ। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि आप ठीक हैं। आप मेरे फोटों के सम्मुख आजमाएं, फोटो अधिक शक्तिशाली है।

माँ होने के कारण मैं चहुँ ओर लीला करती हूँ, पर ये नहीं जानती कि मुझे क्या कहना चाहिए। हो सकता है मेरे सम्मुख बैठकर आप महसूस न कर सकें। फोटो के सामने बैठकर अपने दायें और बायें हाथ पर बारीक पेपर रखें। एक-एक हाथ आगे करके आजमाएं और स्वयं को परखें कि आप क्या हैं। आखिरकार आप सहजयोग में मेरा उद्धार करने के लिए नहीं आए। स्वयं को विकसित करने आए हैं और इसलिए आपको अपना सामना करना होगा और स्वयं देखना होगा कि आपके अन्दर क्या है जो इतना शक्तिशाली हैं, कष्टदायी है और आपको पतन और विनाश की ओर ले जा रहा है।

सहजयोग आनन्द के सागर के सिवाय कुछ भी नहीं है। मैंने सोचा था कि मेरी गैर हाजिरी में भी आप सब आनन्द ले रहे होंगे। ये ठीक भी है, आप आनन्द लेते हैं। कई बार मैंने देखा है, हवाई अड्डे पर जब मेरा जहाज देर से पहुँचता है, पाँच घंटे, चार घंटे-तो भी प्रायः सभी लोग अत्यन्त तरोताजा होते हैं। मैंने पूछा क्या हुआ? श्री माताजी हम सारी रात आनन्द लेते रहे। तो आप जिस चीज़ का आनन्द लेते हैं वह है सामूहिकता। अर्थहीन सीमाओं, जो आपने बनाई हैं, से मुक्त होकर आपको सामूहिकता का आनन्द लेना चाहिए। तब आप आनन्द को

देखें। हर समय आप आनन्द में तैरते रहेंगे। लोगों में एक प्रकार का विवेक है जो आत्मसाक्षात्कार से पूर्व नहीं हो सकता। मैं हैरान हूँ कि कुछ लोग कितने गहन हैं और सहजयोग को उन्होंने किस प्रकार अपनाया है। महान कहलाने वाले, महान असूलों के, परन्तु बहुत उग्र स्वभाव के, असहनशील लोग भी सहजयोग को इस प्रकार अपना लेते हैं क्योंकि उनके अन्दर इतनी गहनता है कि हर चीज़ सुगमता से आत्मसात हो जाती है।

सभी लोग प्राप्त कर सकते हैं परन्तु व्यक्ति को अहं तथा बंधनरूपी अपने मस्तिष्क के दो पहियों से सावधान रहना है। भारत में सभी प्रकार के बंधन हैं। पश्चिमी देशों में सभी प्रकार के अहं हैं, भिन्न-भिन्न प्रकार के। मैं हैरान थी कि उसका सामना करने के लिए मैं क्या कहूँ! यह अत्यन्त सूक्ष्म चीज़ है जिसे लोगों ने अपने मस्तिष्क में बिठा लिया है। अतः आज आप लोगों के लिए यह निर्णय होना है कि अभी तक आप नन्हें बालक हैं और नन्हें बालकों की तरह अपने अन्तः की शांति, पावित्र्य और सौंदर्य को स्वीकार करने और आत्मसात करने के लिए आपके पास शुद्ध हृदय होना आवश्यक है। पवित्रता के बिना आप आनन्द नहीं उठा सकते। सहजयोग में यद्यपि बहुत लोग हैं, फिर भी प्राचीन सन्तों की पवित्रता को अभी हमें प्राप्त करना है। हमारे देश में भी बहुत से लोग हैं। उदाहरणार्थ कल ये लोग अली के भजन गा रहे थे। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई क्योंकि वे एक अवतरण थे। उनके पावित्र्य की महिमा लोग अब गा रहे हैं। तब उन्हें सताया गया और उनकी हत्या कर दी गई। और बहुत से सन्त हैं। दम-दम साहिब, निज़ामुद्दीन औलिया आदि। हमारे देश में इतने अधिक सन्त हुए जितने अन्य किसी देश में नहीं हुए। हमारे यहाँ ही इतने सन्त क्यों हुए? इसलिए नहीं कि हम कोई बहुत अच्छे लोग थे, परन्तु इसलिए कि हमें सुधारना था। कार्य होने थे इसलिए वे यहाँ अवतरित हुए। यह योगभूमि है। भारत में आप जहाँ कहीं भी जाएं मैं हैरान थी, हरियाणा में बहुत से महान सन्त हुए, परन्तु उन सबको सताया गया, कष्ट दिया गया, कभी उन्हें समझा नहीं गया। यह इतना कष्टदायी है और इससे आपके हृदय को चोट पहुँचती है कि किस प्रकार इन मूर्ख, अज्ञानी और अन्धे लोगों ने उन सन्तों को सताया। तो उन सब सहजयोगियों का यह कर्तव्य है कि खोज निकालें कि सन्त कौन है? सहजयोग में भी, मैंने देखा है, लोग दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं। आपको यदि सत्य की पहचान और सूझ-बूझ नहीं है, आपको यदि इस बात का विचार नहीं है कि सत्य क्या है, प्रेम क्या है, शुद्ध करुणा क्या है तो आप सहजयोगी नहीं हैं। स्थूल दृष्टि से आप व्यक्ति को देखते हैं। उसके गुणों को नहीं देखते। एक तरफ़। अब जब कि मैं इतनी वृद्ध हो गई हूँ, मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप अपनी दृष्टि अपनी ओर करें, अन्तर्दर्शन करें क्योंकि आप ही में से कुछ लोग आपके चित्त को भटकाने का प्रयत्न करेंगे, उल्टी सीधी बातें कहने की कोशिश करेंगे। यह कहना अत्यन्त सुगम है कि वह बेईमान है, चरित्रहीन है, यह कहना बहुत आसान है। परन्तु आप क्या हैं? अब हमें समझना है कि समन्वयन (एकीकरण) द्वारा सहजयोग को दृढ़ करना आवश्यक है। हम एकीकरण में विश्वास करते हैं। फूट डालने वाली कोई भी चीज़ जब आपके मस्तिष्क में आती है तो तुरन्त आप इसे निकाल फेंके। आज के दिन मैं आप सब से ये प्रार्थना करती हूँ कि कृपया अन्तर्दर्शन करें, बिना अन्तर्दर्शन के आप स्वयं का भी सम्मान नहीं कर सकते, स्वयं को भी प्रेम नहीं कर सकते। आप यदि स्वयं को प्रेम करेंगे तो अन्तर्दर्शन भी करेंगे और अपनी गलतियों को ढूँढ़ लेंगे। मान लो मुझे ये साड़ी पसन्द है तो इसके विषय में मुझे यदि कोई संदेह होगा या इस पर किसी प्रकार के धब्बे मुझे नजर आएंगे तो मैं इन्हें साफ करूंगी। इस बात का मुझे कोई गर्व नहीं होगा, इधर-उधर

जाकर मैं कहती न फिरूंगी कि देखिए मेरी साड़ी पर इतने धब्बे हैं। इसी प्रकार आपके अन्दर जो भी असहज स्वभाव है आपको उस पर गर्व नहीं होना चाहिए। और इस तरह से बातचीत भी नहीं करनी चाहिए। ईसा ने ऐसे लोगों को 'कानाफूसी करने वाले' कहा है। उन्होंने कहा कानाफूसी करने वालों से सावधान रहें। मैं कहूँगी कानाफूसी करने वालों को बाहर निकाल दें। केवल यही उपाय है। हिन्दी में उन्हें 'बकवासी' कहते हैं। वे वास्तव में बकवासी हैं अर्थात् वे अन्य लोगों के बारे में सभी प्रकार की उल्टी-सीधी बातें करते रहते हैं। अपने विषय में नहीं जानते कि वे क्या हैं। भारत में ये दोष, मैं स्वीकार करती हूँ, बहुत अधिक है। ऐसा कहने पर मुझे खेद है क्योंकि मैं भी एक भारतीय हूँ। दूसरों की बुराई करने की आदत है, बस बैठ गए और गप-शप शुरू कर दी। वे सहजयोग की बात नहीं करेंगे, कितने लोग सहजयोग को भली भाँति जानते हैं। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि मुझे उपाधियाँ देनी हों तो आपको कौन सी उपाधि दूँ? आप मुझे बताएं। आप को तो अपनी चैतन्य लहरियों का ज्ञान नहीं है। निःसन्देह आप सहजयोगी हैं क्योंकि आप उत्थान प्राप्ति के जाल में फँस गए हैं। परन्तु वास्तव में कितने लोग इसमें विकसित हुए हैं? आप विकसित हो सकते हैं।

मैं बार-बार आपसे कहती हूँ कि मुझे प्रसन्न रखें। इसके लिए आपको सभी घटिया किस्म की बातें त्यागनी होंगी। परन्तु एक दूसरे से समझने का प्रयत्न करें कि हम सहजयोग के विषय में क्या जानते हैं। परस्पर विचार विमर्श करें और अपने अनुभवों का वर्णन करते हुए सहजयोग को कुछ योगदान करें। बहुत से लोगों को काफी ज्ञान है। मैं ये नहीं कह रही कि वे कुछ नहीं जानते। परन्तु एक बुरा व्यक्ति सभी को उसी प्रकार खराब कर सकता है जिस प्रकार एक सड़ा हुआ सेब सेबों के पूरे ढेर को सड़ा सकता है। तो हमें क्या करना चाहिए? सड़े हुए सेब को बाहर फेंक देना चाहिए। ऐसा करना अत्यन्त आवश्यक है।

मुझे लगता है कि ये सभी कुछ आपका साक्षी है, मौन साक्षी। जब मैं बड़े-बड़े पर्वतों को देखती हूँ कि ये महान सन्त हैं जो सब कुछ देख रहे हैं और विश्व में घटित होने वाली सभी घटनाओं को लिपिबद्ध कर रहे हैं, क्योंकि वे भी समझते हैं और जानते हैं।

मुझे आपको बार-बार बताना है कि स्वयं को, अपने चक्रों को, अपने दोषों को देखने का समय आज ही है। इसी से आपको वह स्थायी आनन्द प्राप्त होगा जिसका वचन दिया गया था। आप निर्विचार समाधि को पा लेंगे और निर्विकल्प समाधि को भी, परन्तु अपने अहम् तथा बन्धनों के जाल में कभी न फँसे। आज के दिन मुझे आपको यही बताना है। आज के दिन जब आप मेरा जन्मोत्सव मना रहे हैं आप अपना जन्मोत्सव मनाएं। अपना जन्मोत्सव मनाएं और स्वयं देखें कि आपने क्या प्राप्त किया है और क्या प्राप्त करने वाले हैं। आपके लिए उत्सव मनाने का यही उपयुक्त समय है; तब आप मेरा जन्मोत्सव मनाएं। अपने जन्मोत्सव की अपेक्षा आप का जन्मोत्सव मना कर मुझे प्रसन्नता होगी।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahari

आपणा सगळ्यांना अनंत आशीर्वाद. डॉक्टरसाहेबांनी एक झोपेची गोळी दिली आणि मी झोपून गेले. पण इकडे तुम्ही सर्व जण भजन-गाणी गात होता; मला वाटले की ज्यांना गाण्याचा प्रसंग मिळाला नव्हता त्यांना पण गाणी म्हणण्याचा अवसर मिळेल. सर्व काही ठीक चालले आहे. पण जगांतील सारी माणसे जेव्हा झोपलेली असतात तेव्हा सहजयोगी जागा असतो; आणि जेव्हा सारी माणसे जागी असतात तेव्हा सहजयोगी झोपलेला असतो. याचा अर्थ एवढाच की सहजयोग्याचे चित्त जिथे लागलेले असते तिथे इतर माणसांचे लक्ष नसते; त्यांचे मन दुसऱ्याच गोष्टीमध्ये अडकलेले असते. कुठल्या ना कुठल्या कारणामुळे ती माणसे सत्यापासून दूर (विमुख) असतात. म्हणजे पहा की कुणाला पैशाची काळजी. कुणाला सत्तेची फिकीर; माणूस या साऱ्या भानगडीमध्ये माणूस कसा गुंतून भरकटत असतो समजत नाही; आणि या साऱ्यामुळे त्याची नजर सत्याकडे वळतच नाही. आता कुणी याचे विश्लेषण करत बसेल, याला कारण अमुक आहे, तमुक आहे असे सांगत बसेल. पण मी तर याच्या मुळाशी अज्ञान आहे असेच म्हणेन. अज्ञानामधे मनुष्य काय काय करत राहिल सांगता येणार नाही. जणू तो एक प्रकारच्या अंधारामध्ये चाचपडत असतो. समजा इथे आता एकदम दिवे जाऊन अंधार-अंधार झाला तर काय गडबड होईल; कुणी इकडे-तिकडे पळायला लागतील, धावपळीमध्ये काही लोक पडतील, त्यांच्या अंगावर इतरांचे पाय पडतील, कुणाला दुखापत होईल वगैरे काहीही होऊ शकेल. आपण लोकह अशाच अंधः कारात आहोत. अशा अवस्थेत आपण असतो तेव्हा झोपी गेल्यासारखे असतो. पण जेव्हा या झोपेतून 'जागृत' होतो. कुण्डलिनीचे जागरण होऊन जेव्हा तुम्ही सत्याला सामोरे होता त्या सत्याची महती

कुणी वर्णन करून सांगू शकणार नाही. एकाला मी विचारले की, "सहयोगात येऊन तुला काय मिळाले?" तर म्हणतो, "माताजी, काही एक असं सांगता येणार नाही पण सारं काही मिळाले." मी पण आजच्या या दिवशी म्हणेन की सहजयोगात मला सर्व काही मिळाले. मी जेव्हा लहान होते तेव्हा माझ्या वडिलांना म्हणायची की आकाशात जसे तारे चमकत आहेत तसे या जगामध्ये अनेक तेजःपुंज लोक बनावेत आणि परमात्म्याचा प्रकाश सगळीकडे पसरावा. माझे वडील म्हणायचे की, "हे सर्व होऊ शकेल. त्यासाठी सामूहिक चेतना जागृत होण्याची तू व्यवस्था कर. काही भाषणे नको करूस, ग्रंथ लिहिण्याच्या फंदांत पडू नकोस; त्यांतून आणखी एखादे बायबल वा कुराण बनेल आणि पुन्हा त्यांतूनच झगडे, वादविवाद होतील. म्हणून प्रथम तू सामूहिक चेतना तयार कर." आणि आता ती सामूहिक चेतना कार्य करू लागली आहे, हे अगदी सहज घटित होऊन गेले. पण त्याच्यामध्ये जे प्रश्न येत आहेत. त्यासंबंधी आज मला तुम्हाला सांगायचे आहे.

सामूहिक चेतना जागृत झाली आणि जगभर, अनेक देशांमधून, अनेक लोकांना सत्य समजले ही फार आनंदाची घटना आहे. पण असाही एक विचार येऊन खेद होतो म्हणजे या सामूहिकतेत आपण निवड करू शकलो नाही; दरवाजा उघडला म्हणून अनेक लोक आत आले आणि येतांना बरोबर आपल्या वाईट गोष्टी पण घेऊन आले. आणि असे खराब लोक थोड्याशा संख्येने आले तरी फार नुकसान होते. नामदेव एवढे मोठे संत होते तरी ते पण म्हणायचे की जे लोक खराब आहेत ते सुधारू शकणारच नाहीत; त्यांची आत्मिक उन्नति होऊच शकणार नाही. त्यांनी माशीचे उदाहरण देऊन सांगितले की माशी आपण खात असलेल्या

अन्नावर बसली तर आपल्यास यातना होणार आणि मेलेली माशी जर का आपल्या पोटात गेली तर आपणही मरणार. ही माशी कधी ठीक होणार नाही. सहजमध्ये आपल्यामधील अशा सर्व वाईट अवृत्ति गळून गेल्या पाहिजेत; जोपर्यंत ते होत नाही तोपर्यंत आपण वरच्या स्थितीला येणार नाही. पंखामध्ये काही जखम झाली तर पक्षालाही उडता येणार नाही. म्हणून या आनंदाच्या आकाशामध्ये, ज्याला का मी 'रांगांचल' 'आईचा पदर' असे म्हटले. तुम्ही एखाद्या पक्ष्याप्रमाणे भरारी मारू शकणार नाही. कारण तुमच्या पंखांमध्ये काही ना काही तरी अडकून बसलेले असते. आजचा दिवस एक शुभदिन आहे, पुष्कळ लोकांना वाटते की हा एक फार मोठा दिवस आहे कारण या दिवशीच काही विशेष कार्य घडून आले. असे लोकांनी पण सांगितले आहे परंतु आजच्या या दिवशी तुम्हां लोकांना एक विशेष कार्य करायचे आहे. तुम्ही फुग्यांची इतकी सुंदर आरास केली आहे की पाहूनच मन आनंदित होते; वाटते की साध्या रवराच्या वस्तूमध्येही आपल्याला आनंद व सुख देण्याची शक्ती आहे; आणि त्याची वस्तू पण सौंदर्यपूर्ण होऊ शकते. आपण तर माणसे आहोत एवढंच नव्हे तर सहजयोगी आहोत. तर दोन्ही स्थितीला येण्यासाठी आपण काय करायला पाहिजे.

मला आलेला एक अनुभव कथेच्या रुपाने मी तुम्हाला सांगते. मी हिंदीमध्ये बोलत आहे कारण हा दोष जास्त करून हिंदुस्तानी लोकांमध्ये आहे; इंग्रज वा पाश्चात्य लोकांमध्ये तो कमी प्रमाणात आढळतो; त्यांना तेवढी अवकल पण नाही. आमच्या या आजच्या भारतवर्षामध्ये पूर्वी अनेक देश सामावलेले होते; जसे सिलोन, बर्मा, पाकिस्तान, बांगला देश अशा अनेक देशांचा भारत होता. ही आपली भारतमाता आहे. पण लोकांनी त्याची शकले पाडली. कशासाठी हे तुकडे केले? असे झाले कारण या देशामध्ये असे लोक होते की ते म्हणून लागले की अमका-अमका आपल्या देशाचा लीडर झाला, म्हणजे बडा झाला मग आपणही असंच काही तरी करू या की आपण ही त्यांच्याइतकेच बडे बनू; ते प्रधानमंत्री होऊ शकले तरी मी पण तसाच प्रधानमंत्री बनू शकतो. ही ईर्ष्या वाढून त्यांना वाटू लागले की आपला एक तुकडा स्वतंत्र केला तर त्यावर आपल्याला आपली सत्ता चालवता येईल. काही मोठमोठ्या

घराण्यांतही कधी कधी असे होते की काहींना वाटू लागते की आपण वेगळं घर आपल्यासाठी बनवले पाहिजे व वेगळे राहिले पाहिजे. मी आणि माझे कुटुंब स्वतंत्र वेगळे राहू या म्हणजे आपला इतरांशी संबंध राहणार नाही. मानव प्राण्यांतच हे विभाजन करण्याची प्रवृत्ति असते. अशा तऱ्हेनेच बांगला देश हा एक स्वतंत्र देश झाला. त्यावेळेस मी तरुण होते. काही लोक एवढ्या छोट्या बांगला देशाला स्वातंत्र्य मागत होते कारण त्यामुळे आपल्याला आपलं राज्य चालवता येईल असं त्यांना वाटायचं. म्हणजे इस्लामच्या नावाखाली म्हणा किंवा वर्णाच्या नावाखाली म्हणा. कुठल्या तरी सबबीवर विभाजन करायचं. आता तर बांगलादेशमध्ये अशी परिस्थिती आहे की मी तिथे जायचे म्हटले तर लोक मला सांगतात "माताजी, तिकडे जाऊ नका, गेलात तर तुमच्या डोळ्यांतून अविरतपणे अश्रूच वाहू लागतील. इतकी दुर्दशा तिथे आहे." पाकिस्तान काय, सिलोन (श्रीलंका) काय तिथेही तीच परिस्थिती. हे जे तुकडे-तुकडे पाडून वेगवेगळे भाग बनवले गेले ते आपण आपले राज्य चालवू असे म्हणण्यामुळे. पण त्या देशांतच अधिक प्रमाणावर प्रधान-मंत्रीच मारले गेले, त्यांचे खून झाले. ईर्ष्यामुळे अशी ईर्ष्याच वाढत जाते. आणि असे वेगवेगळे ग्रुप्स बनत राहतात. मग आपापसात भांडणं, लढाई चालू होते. अजूनही आपल्याकडे ही विभाजन-प्रवृत्ती दिसून येते; कुठे विदर्भ, कुठे झारखंड वगैरे वगैरे प्रकार चाललेच आहेत. अशा भांडणांतून काय निष्पन्न होणार? कुणाला विभाजन करून काही मिळाले का? कुठल्याही प्रकारचे विभाजन करणे याच्या सहजयोग पूर्णपणे विरोधात आहे. आपल्याला उलट सगळ्यांना जोडायचे आहे. **Synthesis** करायचे आहे. सहजयोगाचे सर्व कार्य **Synthesis** मधून चालते. आपल्याला जर **Synthesis** म्हणजे काय याची समज नसेल तर आपण सहजयोग सोडून देणेंच योग्य. अलिकडेच एक वाईट गोष्ट झाली; एक साहेब सहजयोगांत होते आणि ते दुसऱ्यांच्या डोक्यावरची भूते काढण्याच्या मागे लागले. मी त्यांना सांगितले की असे करू नका, नाही तर तीच भूते तुमच्या डोक्यावर स्वार होतील. पण त्यांना तो रोकच जडला होता. कदाचित त्यासाठी लोक त्यांना पैसे पण देत असावेत. नंतर त्यांनी आपला एक वेगळा ग्रुप बनवला.

सहजयोगामधेही जे त्यांच्यासारखे होते ते त्यांना मिळाले, आणि त्यांनी आपली एक वेगळी संस्था तयार केली. माझ्याबद्दल मात्र त्यांना काही शंका नव्हती; पण इतरांबद्दल, विशेषतः लीडर्सबद्दल त्यांच्या मनांत नाराजी होती. म्हणून सारखे त्यांच्यातील दोष दाखवत राहून स्वतः मात्र अगदी युद्ध असल्याचा देखावा त्यांनी निर्माण केला. वर म्हणायचे आम्ही माताजींचे भक्त आहोत. मला न विचारता माझी परवानगी न घेता त्यांनी एक मोठा गुप बनवला, माझे फोटो सगळीकडे वाटत राहिले. काय काय करायला लागले मला माहीतच नाही. लीडर्सबद्दल हा चांगला नाही, अमका खराब आहे असं म्हणण्यांत काय अर्थ? जर कुणी खराब खरोखरच असला तर ते मलाच कुणी न सांगता समजत असते. जर तुम्ही मला मानता तर माझ्यावरच ते सोपवा; लीडर चांगला आहे का नाही हे माझे मलाच ठरवू द्या. पण लीडरशी वाद घालायचा. तू हेच कां केलेस. ते का नाही करत इ. विचारण्याचा अधिकार तुम्हाला नाही. आता कुणी म्हणणे लीडर हवाच कशाला? त्याचे कारण म्हणजे मला सर्वांशी संपर्क राखणे शक्य नाही म्हणून अशा एखाद्या लीडरसारख्या माध्यमांतून मी तमच्याशी संबंध राखू शकते. हे सोडून काही लोक लीडरवरच नाराज होतात. आता लीडरमध्ये काही दोष असतील तर ते काम मी करेनच. ते तुमचे काम नाही; वाटल्यास मला तुम्ही पत्र पाठवून कळवा. नुसते लीडर पसंत नाही म्हणून गुप करत असाल तर त्यापेक्षा सहजयोगच सोडून द्या. अशा लोकांबरोबर आणखी दहा-बारा कच्चे सहजयोगी बुडू देत.

अशाच प्रकारच्या ७०-८० त्रासदायक लोकांनी, ज्यांना मी ओळखत नाही, ज्यांना मी कधी पाहिले नाही, एक मोठा गुप बनवला आणि त्यांचा तो महाशय म्हणून लागला की, "मी कलकीचा अवतार आहे" ... अवतार असाल तर असा, मला काही म्हणायचे नाही, पण तुम्ही सहजयोगांत नाही, सहजयोगांत तुम्हाला काही स्थान नाही. पण लोक त्याला खरंच कलकीचा अवतार मानून त्याचे चरण पुजायला लागले, नाही तरी असे चरणछू महाराज असतातच. ते पैसे पण घेत राहतात. लीडरच्या ज्या दोषांबद्दल ते नाराज होते तेच दोष त्यांच्यावरही प्रादुर्भाव जमवू लागले. मग सगळे लोक म्हणायला लागले की, हे काय चालले आहे? तर ईर्ष्या

असली, महत्वाकांक्षा वाढू लागली की असे प्रकार घडू लागतात. त्यांत मग मूर्ख सहजयोगी पण अडकतात— कारण हा शेवटचा निवाडा आहे. लीडरबद्दल तर काय विचारयला नको — त्याचे चारित्र्य ठीक नाही, तो पैसे कमावतो, तो असाच आहे, तसाच आहे वगैरे, म्हणजे सीबीआय च्या वरताण प्रकार. मला आश्चर्यच वाटले. मला विचारून तरी करा. म्हणताना म्हणतात, "माताजी आम्ही तुम्हाला मानतो" मग मी म्हणून मी सांगते त्यावर तरी विश्वास ठेवा. मग ते लोक गणपतिपुळ्याला पण आले, माझ्यावर दगडफेक केली कारण एकदा मनावरचा ताबा सुटला की एखाद्या दारूड्याप्रमाणे आपण काय करत आहोत याचे भान उरत नाही. तिथे माझ्या प्रोग्राममध्ये येऊन त्यांनी तमाशा केला. मला खराब चैतन्यलहरी जाणवतच होत्या. हे सहजयोगी आहेत का हीच मला शंका आली. स्वतःची व्हायब्रोशन्स ठीक करण्याऐवजी ते दुसऱ्यांचे व्हायब्रोशन्स पहात होते. म्हणून अशा लोकांनी सहजयोगातून बाहेर पडायला हवे. त्यांचपैकी एखादा उभा राहिला तर त्याच्यामागे, आपल्याला स्वर्गात जायला मिळेल अशा खुळ्या समजुतीने, अनेक लोक लागतील. पण असं होत नाही. सहजयोग ही सामुहिक प्रक्रिया आहे. म्हणजे कुणाचे नुसते कान इकडे लागले. किंवा हात किंवा नाक लागले तर काहीच घटित होणार नाही कारण परमचैतन्याला तसं चात नाही. मग मी म्हणाले, "तुम्ही बंडाई माजवत आहांत" तर ते उलट म्हणाले, "तुम्ही आम्हालाच शिव्या देत आहांत;" मी पुन्हा म्हणाले, "मी तुम्हाला फक्त एवढेच सांगत आहे की चैतन्याविरुद्ध बंड माजवू नका." म्हणूनच त्या प्रदेशांत भूकंप झाला होता. एक आई म्हणून मी त्यांना सांगत होते की सत्य आणि परमेश्वर तुम्हाला शिक्षा दिल्याशिवाय राहणार नाही. म्हणून एका आईचा उपदेश माना आणि हे सर्व सोडून द्या. पण अजून ते अडकलेलेच आहेत.

सहजयोगांत कसली बळजबरी नाही. सहजयोगापेक्षा श्रेष्ठ असे मिळवण्यासारखे दुसरे काही नाही हे माहीत असूनही मी माझ्या कुटुंबातील माणसांनाही त्याची बळजबरी केली नाही. तुम्हाला यायचे असेल तर या. नको असेल तर तुमची मर्जी; पण असले वेफर धंदे करू नका. तसे केलेत तर तुम्ही सहजयोगी असं स्वतःला म्हणूच शकणार नाही.

सहजयोगाच्या दृशिकोनांतून पाहिले तर लीडरबरोबर असं वागणे हे पाप आहे आणि त्यासाठी गुप बनवणे हे महापाप आहे. तुम्हाला वाटले तर मला पत्र पाठवा, मी चौकशी करेन. खरे तर तुमचे बरोबर आहे की त्यांचे बरोबर आहे हे कायब्रेन्सवरून मला लगेच समजेल. पण पत्रांतून ते वाटेल ते लिहीत सुटतात, इतके मुख्यासारखे लिहितात की मी त्याचा विचारच करत नाही. कधी लीडरच असा आहे, अमका असा आहे असे म्हणत सुटायचे. तुम्ही स्वतःकोण मोठे महान जीव आहात का? स्वतःकडे आधी पहायला शिका; स्वतः ठीक नसाल तर पुढे काय होणार? अशा गोष्टी घडू लागल्या तर सहजयोग संपणार. आत्तापर्यंत असं कुठे झालेले नाही. जे लोक बुडावला लागले आहेत त्यांना वाचवण्याचाच प्रयत्न आम्ही करत आलो; म्हणून जास्त सहजयोगी होतील तेवढे चांगलेच. पण मला असंही वाटते की परेश्वराचे हे साम्राज्य सत्यावर अधिष्ठित आहे म्हणून इथे येण्यासाठीही काही पूर्वतयारी करावी लागते. किंवा इथे जागा फार थोडी असल्यामुळे नालायक लोकांना बाहेर काढण्याचे कामही परमचैतन्य करत असेल. पण तुम्हाला या भानगडीत पडण्याचे कारण नाही. तुमची चेतना जागृत असेल तर आधी स्वतःकडे लक्ष द्या. दुसऱ्यांकडे पाहू नका, स्वतःमध्ये काय चुकत आहे तिकडे लक्ष द्या. काही लोक पैशात अडकलेले असतात, पैसा बनवण्यासाठी ते सहजयोगात येतात; पण तुम्ही त्यांनी सांगितले की सहजयोग हा पैसा कमावण्यासाठी नाही तरी त्यांच्या डोक्यांत ते शिरणार नाही.

आज मला हें पण तुम्हाला सांगावेसे वाटते की पैशाच्या बाबतीत लोकांना फार थोडी अक्कल असते. ख्रिस्त म्हणाले होते की जो पहिला तो शेवटचा आणि जो शेवटचा तो पहिला होणार. मी तसलं काही म्हणणार नाही. सुरुवातीला जे सहजयोगी मुंबईला आले ते मला म्हणायचे की आमच्या प्रत्येकाकडून एक हजार रुपये तरी घ्या. मी त्यांना म्हणायचे "बाळांनो, मला पैसे मोजतां येत नाहीत, पैसे कसे ठेवायचे हेही माहीत नाही. बँकेचा व्यवहार पण समजत नाही. पण तुम्ही एखादा ट्रस्ट केलात तर तुमचे पैसे त्यामध्ये मी ठेवीन." मला प्रामाणिकपणा दाखवायचा होता असं नव्हे तर अप्रामाणिक कसं व्हायचं ही अक्कलच माझ्याजवळ

नाही. मला पैसे कसे मोजायचे हेच समजत नाही त्याला मी काय करणार? चेक कसा लिहायचा हे सुद्धा मला माहित नाही. तुम्हाला आता माहीत आहे की धर्माच्या नावाखाली कुणी पैसे मागायला लागला तर त्याला शिक्षा होणारच. पैशाचा खेळ फार धोकादायक असतो. म्हणून यावेळी माझ्या मनांत असा विचार आला की निर्धन महिलांसाठी- रस्त्यावर भीक मागणाऱ्या, नवऱ्याने टाकलेल्या अनेक निराधार मुस्लिम महिला, मुलांच्या पोटापाण्यासाठी भीक मागणाऱ्या, राजस्थान व बिहारमधून आलेल्या कंगाल स्त्रिया काहीतरी चांगले मदतकार्य करण्यासाठी एक संस्था असायला हवी. त्यासाठी तुम्ही आर्थिक मदत करायची जरूर नाही. आम्ही तुमच्याकडून कधीच पैसे मागितले नाही; ते सर्व जमून येते. पण मला वाटते की तुम्हालाही आशीर्वाद मिळावे म्हणून मी म्हटले की ठीक आहे, प्रत्येकाने ५०० रु. दान करा. पण त्यावरही एवढे वादंग माजले; माताजी, हे तुम्हाला कुणी सुचवले असे मला विचारू लागले मला कितीतरी पत्रे व फोनवरून तक्रारी आल्या.

मला कुणीही सुचवणारा असू शकात नाही. मी माझ्या स्वतःच्या इच्छेनुसार चालते. हे तुम्ही लक्षात घ्यायला हवे. मी भोळी दिसत असेन पण मी तितकीच हुशार आहे! म्हणून मला बनवायचा प्रयत्न करू नका. सहजयोगासाठी तुम्ही एवढेसुद्धा करू शकत नाही? इतकी वर्षे खपून मी कित्येक रोगी बरे केले, इतके पैसे वाटले, काय काय केले पण एवढ्या लहानशा गोष्टीबद्दल इतक्या तक्रारी? मला दुःख होते. आधी पण एकदा या संकुचित प्रवृत्तीचा दोष दिसून आला होता. म्हणून विशेषतः भारतीय लोकांनी पैशावरचे लक्ष काढून टाकले पाहिजे, म्हणजेच त्यांची सहजयोगात प्रगती होऊ शकेल; नाही तर 'जेल-भरो' आंदोलन चाललेच आहे. मी तुमच्यामधील लक्ष्मीतत्व जागृत करून दिल्यावरही पैशाबद्दलचे तुमचे लक्ष कमी कसे होत नाही? जेवढे तुम्ही घाल तेवढे तुम्हाला मिळणार आहे. देण्यामध्ये काय व किती आनंद असतो मला सांगता येणार नाही. तुम्ही मला जेव्हा काही भेट म्हणून देता तिचा तुम्हाला बरे वाटावे म्हणूनच मी स्वीकार करते. मला कशाची जरूर नाही आणि माझ्या घरांतही अशा वस्तू ठेवायला जागा नाही. तुम्ही इतकं प्रेमाने देता पण पुन्हा पुन्हा तेच सांगायचा- मला साडी देऊ नका.

दागदागिने देऊं नका, मला कशाचीही जरूर नाही इ. - कंटाळा येतो. मी असंही म्हणाले होते की मी सारे दागदागिने विकून टाकते, म्हणजे त्या पैशातून सारी कामे करतां येतील; तरी ते म्हणतात की तुम्हाला काय वाटेल ते करा पण आम्ही तुम्हाला दैतच राहणार- मी हे सारे तुम्हाला आनंद मिळावा म्हणून करत राहते. मला कसली देवाण-घेवाण नको असते. मी काही घेतलेच नाही तर देणार तरी काय? पण आपण भारतीयांनी ही गोश समजून घ्यायला हवी.

आपल्या भारतदेशाला स्वराज्य मिळवण्यासाठी प्रयत्न करणाऱ्या मोठमोठ्या लोकांना मी बघितले आहे. माझ्या वडिलांनी त्यासाठी सर्व जमीन विकली, आईने सर्व दागिने विकले, सर्वजण तुरुंगात गेले. मला तर तिथे इलेक्ट्रिक शॉक्स दिले, बर्फाच्या लादीवर झोपवले. मला अर्थात काहीच झाले नाही. ते जणु नाटकच होते; पण कित्येक लोकांना हालअपेशा भोगून दोन-तीन वर्षे तुरुंगवास काढावा लागला. म्हणा आताही लोक तुरुंगात जातच आहेत, शंकाच नाही; पण ते त्यांनी पैसे खाल्ले म्हणून, वर ते आव आणतात आम्हालाही तुरुंगवास घडला असे म्हणून! सहजयोगामधे ज्या लोकांनी गैरवर्तन केले त्यांना नक्कीच बाहेर पडावे लागणार आहे; कुणी लीडर विरुद्ध आवाज उठवला तर त्याला आम्ही बाहेर काढणारच. ही गोश नीट लक्षात ठेवा कारण आपल्याला एकसंघ रहायचे आहे (विभाजन नको). तुम्हीच स्वार्थी असाल, रिकामटेकडे असाल तर पोलिसांत किंवा सी. आय. डी. मध्ये भरती व्हा; लायकी नसतानाही तुम्ही सहजयोगांत कशासाठी आलात?

आजच्या आनंदाच्या दिवशी हे सर्व बोलणे बरोबर नाही हे मला जाणवते. मी काल झोपले तेव्हा आज काय बोलावे! याचाच विचार करत होते. मी आतां ७४ वर्षांची झाली आहे मग काय बोलायचे? पण वयोवृद्ध माणसांचे एकच काम असते, ते म्हणजे आपल्या मुलांना शिकवण देणे. मानवी जीवनाचा उद्देश काय व सहजमध्ये येण्याचा उद्देश काय हे समजावणे. सहजची वाट अगदी अरुंद आहे. सहजयोगांत तुम्ही स्वतःचा नाश करून घ्यायला आला नाहीत; पण या अरुंद वाटेनेच तुम्हाला सहजचा प्रवास करायचा आहे; त्या वाटेच्या एका बाजूला मोठा डोंगर तर दुसऱ्या बाजूला दरी आहे. म्हणून तुमच्याजवळ दृढनिश्चय,

सृजता, शुद्ध इच्छा असेल तरच या विकट वाटचालीतून तुमची उन्नति होणार. एरवी ते घटित होणार नाही आणि तुम्ही मधेच कुठेतरी अडकून रहाल. उंच डोंगरावर लोक गाढवांवर बसून चढत जातात; कुणी तरी त्या जनावरांना विचारले तुम्ही गाढव कसे बनलात? तर ते म्हणाले आम्ही पण तुमच्यासारखेच होतो पण अर्धवटच राहिल्यामुळे देवाने आम्हाला गाढवाचा जन्म दिला म्हणजे तरी आम्ही वरपर्यंत चढू शकू. या कथा तुम्ही ऐकल्या-वाचल्या आहेत. अम्मल्याकडे अशा अनेक कथा आहेत; या साऱ्या आपल्या मार्गदर्शनासाठी असतात; पण ज्या कथेत नीतिमूल्य असते त्याच खऱ्या कथा.

सहजयोगाचे सर्व ज्ञान तुम्हाला एक प्रकारे विनामूल्य मिळाले आहे. पूर्वजन्मीच्या तुमच्या पुण्यांमुळे तुम्हाला ते मिळाले आहे. पण सहजयोग मिळाल्यावर आणि इतके फायदे मिळाल्यावर तुम्ही कुचकामीच राहणार असाल तर तुम्ही सहजयोग सोडून घावा हेच बरे, म्हणजे मी पण सुटले. एरवी मी फारसा विचार करत नाही, निर्विचारच असते, पण आजकाल या गोशीचा विचार आला की मला काळजी वाटू लागते, कारण मी तुमची आई आहे आणि म्हणूनच तुम्ही स्वतःच्या चुकांमुळे अधोगतीला जाऊ लागल्याचे मला पाहवत नाही. त्याचे मला दुःख होते. सहजयोगात तुमच्याजवळ सर्वकाही आहे. कृपा, आशीर्वाद, आनंद, शांती-, तुमचे सर्व प्रश्नही चुटकीसारखे सुटतात. तुम्हाला हे माहीत आहे, त्याचा अनुभव तुम्ही घेतला आहे आणि तुम्हाला हे सांगायला हवं असे मुलीच नाही.

तुम्ही हा दिवस साजरा केलात, इतके सुंदर फुगे लावलेत त्याबद्दल मी आभारी आहे. पण फुगांची शोभा बघतांना आपल्याला हे पण दिसत आहे की त्याच्यापैकी काहींची हवा पार निघून गेली आहे. पाश्चात्य देशांत हा आणखी एक प्रश्नच आहे. त्यांच्या संस्कृतीप्रमाणे अहंकार असणे एक फार मोठी गोश साध्य करणे म्हणजे असे समजतात आणि अहंकाराची सवय झाली की माणूस कसा दिसतो मला चांगले माहीत आहे. असा माणूस मूर्खासारखाच दिसतो, तो बोलतो, स्वतःचे सांगत बसतो तेव्हा काय पहावे हे कळत नाही आणि त्याच्या मूर्खपणाला हसण्याचा मोह आवरत नाही. अहंकार हा मूर्खपणाचाच परिणाम आहे.,

त्याला काय म्हणावे किंवा त्याला कशाची उपमा द्यावी मला समजत नाही; पण तो या फुग्यासारखा तुमच्या डोक्यात फुगून तुम्ही हवेत तरंगू लागता आणि फुगा फुटला की जमिनीवर आपटता. सहजयोगी जसा जमिनीवर पाय घट्ट रोवून असतो तसं नाही आणि मग तुमचा सर्वनाश होतो, तुमचा सारा अहंकार खलास होतो. डोक्यात जर अहंकार बाळगून राहिलात तर तुम्हाला सहजयोगच समजणार नाही. असे अहंकारी लोक मी पाहिले आहेत. ते सहजयोगांत येतात पण फुशारकी मारतात की इतरांपेक्षा त्यांना ज्ञान जास्त आहे. 'स्व'ला खऱ्या अर्थाने समजण्यासाठी तुम्हाला आंतमत्त खोलवर जायला हवे आणि तसं होण्यासाठी हवेत तरंगत ठेवणाऱ्या डोक्यांतल्या सर्व कल्पना टाकून द्याव्या लागतात. कल्पना करा की तुम्हाला एखाद्या मोठ्या फुग्याला बांधून ठेवले तर मग सागरामध्ये तुम्ही खोलपर्यंत कसे जाणार? ते शक्य नाही. हवेत तरंगत राहणे म्हणजे मूर्खाच्या राज्यांत जाण्यासारखे, दुसरं काय सांगू. इंग्लीश लोकांना **Stupidity** शिवाय दुसरा शब्द सांगता येणार नाही. त्या शब्दांत सर्व आल्यासारखं आहे. मग तुम्हाला कधी हे संपेल असे वाटणार नाही. मनाला येईल तसे तुम्ही वागाल; पण इतकं करून तुम्ही काय मिळवणार? त्यांतून काहीसुद्धा मिळणार नाही. आणि जरी काही मिळवलेत तर लोक तुमचा हेवा करतील. तुम्हाला खाली पाडायला टपून राहतील. तुम्हाला कोणी मित्र राहणार नाही, कुणी तुमच्याकडे दुकून पाहणारसुद्धा नाही; सहजयोगामध्ये असा माणूस असला तर लगेच ओळखला जातो. मी पाहिले आहे की काही लोक बोलायला लागले की महणतात **Ah!** आम्ही अशा माणसाला चांगलेच ओळखतो.

खूप पूर्वी पुण्यामध्ये मला एक अनुभव आला. एका हॉल (वाडा) मध्ये प्रोग्राम करण्याचे ठरले पण त्या वाड्याचे मालक म्हणाले इथे श्री माताजी प्रोग्राम करू शकत नाही कारण त्या ब्राह्मण नाहीत. तेव्हा सहजयोगी म्हणाले की ठीक आहे; असं असेल तर श्री माताजी ब्राह्मण नसल्यामुळे या वाड्यांत प्रोग्राम होऊ शकत नाही असे वर्तमानपत्रांत छापून देतो— मग ते लोक प्रोग्रामला आले; वाड्याचा मालक वर गच्चीवर बसला होता. त्याला कसला तरी विचित्र आजार होता आणि तो चालूही शकत नव्हता. तिथले लोक एकदम

थरथर कापायलाच लागले. मला काहीच ठाऊक नव्हते. मला त्यांनी काही सांगितले पण नव्हते की त्याच लोकांनी त्या प्रोग्रामला विरोध केला होता आणि आता ते थरथर कापत होते. अरे बाप रे, हे काय झाले? एकदम ते म्हणाले, "माताजी, हे सर्व थांबवा, आम्हाला कळले आहे की तुम्ही शक्ती आहात, पण हे थांबवा. आम्हाला सहन होत नाही!" मी म्हणाले, "तुम्ही हे काय केले?" तर म्हणाले, "आम्ही काही केले नाही. हा वाडा व इथे राहणारे लोक ब्राह्मण आहेत म्हणून आम्हाला वाटले की तुम्ही इथे कार्यक्रम घेऊ शकत नाही." मी म्हटले बस, एवढेच! ते म्हणाले की इकडे बसलेले हे लोक बघा, असेच थरथरत आहेत. मी त्यांना तुम्ही ब्राह्मण आहात काय असे विचारले तर त्यांनी सांगितले की आम्ही ब्राह्मण नाही तर ठाण्याच्या वेड्यांच्या इस्पितळातले ठार (**Certified**) वेडे आहोत. त्यावर ते म्हणाले की आमच्यासारख्याच एका वेड्याला तुम्ही बरे केल्याचे आम्हाला समजले आहे; म्हणून आमच्या साहेबांनी आम्हाला इथे आणले आहे. आम्ही खरेच वेड लागलेले लोक आहोत. माझ्याकडे ते लोक बघत राहिले. मी त्यांना म्हणाले, "बघा, तुम्ही पण कापत आहात आणि हे लोक पण कापत आहेत तर आता तुम्हीच तुलना करा आणि ठरवा. मग त्या सर्वांनी सहजयोग घेतला. वर बसलेल्या गृहस्थांना मी म्हणाले, उठा आणि खाली या; खरोखरच ते खाली येऊ शकले; नंतर मला त्या दिवसापासून समर्पित होऊन त्यांनी खूप कार्य केले. मला म्हणायचे आहे ते हे की जे सहजयोगी सतत टीका करत असतात की सहजयोगांत हे ठीक नाही, हे करायला नको, आपल्याला खूप पैसे द्यावे लागतात, अमका लीडर चांगला नाही वगैरे वगैरे बडबडत असतात त्यांनी डाव्या हातावर पातळ कागद ठेऊन फोटोसमोर बसावे आणि कापत राहणे बंद झाले समजावे की तर तुम्ही ठीक आहात, मग उजव्या हातावर कागद ठेवा, तो कागद कापू लागला तर तुमचा अहंकार वाढला आहे असे समजा. अहंकार कसा कमी करायचा तुम्हाला माहीत आहेच. मोहम्मदसाहेबांनी फार सोपा उपाय सांगून ठेवला आहे. आता आपल्यामध्ये अहंकार आणि प्रति अहंकार (संस्कार) या दोन संस्था आहेत आणि त्यामधूनच मन तयार होते; आपण सतत या दोन संस्थांच्या हुकुमतीखाली वावरत

असतो आणि मनाला खाद्य देत राहतो. म्हणून तुम्ही फार काळजी घ्यायला पाहिजे. स्वतःच ओळखायचे; डावा हात कापू लागला तर प्रति-अहंकार वाढला आणि उजवा हात कापू लागला तर अहंकार वाढला आणि मग त्याप्रमाणे ट्रीटमेंट अशा तऱ्हेने दोघांवर उपचार करावचे. माझ्यासमोर असलात की तुम्हाला चांगल्या व्हायब्रोशन्स जाणवतील कारण मी तुमची आई आहे, पण त्याचा अर्थ लगेच आपण मंजुलनांत आहो असा नाही लावायचा; तर माझ्या फोटोसमोर ते करून बघा म्हणजे जास्त स्पशपणे कळेल. आई असल्यामुळे कसे सांगू समजत नाही, मी कधी कधी गंमत करते. फोटोसमोर दोन्ही तळहातांवर वर्तमानपत्राचा किंवा दुसरा कसला पातळ कागद ठेऊन बसा. मग एकदा एक बाजू व नंतर दुसरी बाजू चेक करून पहा आणि ओळखा. म्हणजे असे की सहजयोगात स्वतःचाच उच्चार करण्यासाठी तुम्ही आला नसून स्वतःची आत्मिक उन्नति करून घेण्यासाठी आला आहात. म्हणून स्वतःकडे लक्ष घ्यायला शिका आणि आपल्यामध्ये काय कमी आहे ते जाणून घ्या म्हणजे तुमच्यात कोणता दोष प्रामुख्याने आहे, कशाचा त्रास आहे, कोणता दोष प्रगतीच्या आड येत आहे आणि कोणता हानिकारक आहे हे तुम्हाला कळेल.

सहजयोग म्हणजे आनंदाचा महासागर आहे. मी नमस्ताना तुम्ही तो आनंद उपभोगू शकत असाल असे मी समजते. विमानतळावरची गोश; मी स्वतः पाहिले आहे की माझे विमान चारचार-पाचपाच तास उशीरा आले तरी इतक्या रात्रभर टातकळत राहूनसुद्धा तिथे आलेले तुम्ही लोक टवटवीत दिसता! मी काय झाले विचारले तर म्हणता आम्ही रात्रभर भजने म्हणत आनंदात गुंग झालो होतो! म्हणजे तुम्हाला आनंद मिळाला तो त्या सामूहिकतेचा. असा सामूहिकतेचा आनंद पूर्णपणे लुटण्यासाठी आधी तुम्ही तुमच्यामधील स्वतःच तयार केलेले अडथळे दूर करून टाकले पाहिजेत. मग तुम्हाला खरा आनंद मिळेल आणि त्या आनंदात तुम्ही तरंगत राहाल. काही काही लोकांजवळ जागृतीच्या आधी कळली नाही तरी अशी काही संवेदना असते. काही लोक तर मुळातच इतके सहन असतात कीमलाच आश्चर्य वाटायचे. काही मोठ्या पदावरचे, नावाजलेले, समाजात अत्यंत प्रतिष्ठ व तत्त्वशील पण

तितकेंच गरम डोक्याचे, इतरांवर गुरगुरणारे व रागीट पण सहजयोग घ्यायला आले आणि एका निमिटांत पार! वाला कारण म्हणजे मुळातच ते इतके गहन स्थितीचे असतात की चैतन्य सहजपणे शोषून घेतात.

प्रत्येकाला ते मिळवणे शक्य आहे पण त्यासाठी मनातील अहंकार व प्रतिअहंकार या दोन संस्थांची काळजी घेतली पाहिजे. भारतात तसे अनेक प्रकारचे संस्कार असतात; तर परदेशांत तऱ्हेतऱ्हेचा अहंकार असतो. मला आश्चर्यच वाटते. त्याला कसे तोंड घायचे हे कस सांगावे मलाच कळेना. मानवाच्या मनानेच निर्माण केलेले हे सूक्ष्म शत्रू आहेत. म्हणून आज आपल्याला हे लक्षात घ्यायचे आहे की तुम्ही सर्वजण अजून लहान मुलांसारखे आहात, पण तुमचे हृदयही निर्मळ हवे म्हणजे तुमच्यातील शांतता व शुद्धता यांचे सौंदर्य तुम्ही जाणाल व आत्मसात कराल. पावित्र्याशिवाय या आनंदाचा अनुभव तुम्हाला मिळवणार नाही सहजयोगात आपल्याकडे पुष्कळ लोक असले तरी पूर्वी होऊन गेलेल्या थोर संतांची शुद्धता आपण अजून मिळवलेली नाही. आपल्या देशाची लोकसंख्या अफाट आहे. उदा. काल ते अलीबद्दलचे भजन म्हणत होते; ते अवतारच होते आणि मीपण आनंदात होते. आता ते त्यांची स्तुती गात आहेत. पण त्या काळी त्यांना त्रास दिला ठार केले. अशी पुष्कळ उदाहरणे आहेत. दम-दम-साहेब, निझामुद्दिन औलिया इ. दुसऱ्या कुठल्याही देशांत झाले नाहीत असे थोर संत आपल्याकडे अनेक होऊन गेले हे असं का झाले? आपण चांगले लोक आहोत म्हणून हे घडले असे नाही तर आपल्यामध्ये सुधारणा करावची होती. हे घडवून आणण्यासाठीच त्यांचा इथे जन्म झाला. ही योगभूमीच आहे. कुठेही पहा, हरियानांतसुद्धा खूप संत होऊन गेल्याचे मला सांगितल्यावर मलाच आश्चर्य झाले. पण त्या सर्वांचा छळ झाला, त्यांना त्रास दिला गेला आणि त्यांना लोक समजू शकले नाहीत. काही मूर्ख, अज्ञानी व अधर्मी लोकांनी त्यांचा छळ करावा ही गोश क्लेशकारक व दुःखदायक आहे. म्हणून आता सहजयोगी म्हणून हे शोधून काढणे तुमचे कर्तव्य आहे की कोण संतमहात्मे आहेत. सहजयोगातही काही दुसऱ्यांना नास देणारे लोक आहेत. तुम्हाला जर सत्य काय, प्रेम व करुणा म्हणजे काय हे जाणण्याची समजण्याची क्षमता नसेल

तर तुम्ही सहजयोगी नाही असेच म्हणावे लागेल.

तुम्ही फार दूरवरून (वरवर) लोकांकडे पाहिले तर तुम्हाला काही समजणार नाही. एकच बाजू दिसेल, आता माझ वय इतके झाले आहे की मला तुम्हालाच विनंती करायची आहे की स्वतःकडे पाहायला शिका, आत्मपरीक्षण करा. कारण तुमच्या आजूबाजूला काहीतरी बडबड करून तुमची स्थिति विघडवणारे लोकही आहेत. अमका अप्रामाणिक आहे. तमक्याचे चारित्र्य चांगले नाही अशा तऱ्हेची निरर्थक बडबड करणे अगदी सोपी गोष्ट आहे. आता एकत्रीकरण (Synthesis) करूनच सहजयोग बळकट होणार आहे हे आपल्याला पक्के समजून घ्यायचे आहे; तीच आपली शक्ती आहे. तुमच्या मनांत जरी विभाजन करण्यासंबंधी विचार आला तरी तो ताबडतोब काढून टाका. आजच्या या दिवशी हीच माझी तुम्हा सर्वांना विनंती आहे की कृपा करून आत्मपरीक्षण करा, जोपर्यंत तुम्ही ते करणार नाही तोपर्यंत तुम्ही आत्मसन्मान राखू शकणार नाही व स्वतःवर प्रेम करू शकणार नाही. स्वतःबद्दल आत्मीयता असेल तर आत्मपरीक्षण करून आपले काय व कुठे चुकते हे जाणू शकाल. आता पहा की मला ही साडी आवडते तर ती कुठे खराब झाली नाही ना हे मी लक्ष ठेऊन पाहतो व जरा जरी डाग दिसून आला तर लगेच स्वच्छ करते. त्या डागाबद्दल मी लोकांजवळ बोलून प्रदर्शन करणार नाही. त्याचप्रमाणे तुमच्यामध्ये ज्या अ-सहज सवयी आहेत त्या शोधून गर्व न करता काढून टाका. नुसते त्याची चर्चा करू नका. अशा लोकांना “पुटपुटणारे जीव” (Murmuring souls) असे ख्रिस्त म्हणायचे, आणि त्यांच्यावर लक्ष ठेवा असे सांगायचे. मी तर पुढे जाऊन असे म्हणून की अशा लोकांना दूर काढा. तेवढा एकच मार्ग आहे. हिंदीमध्ये त्याला “बकवास” असे म्हणतात— दुसऱ्याबद्दल नुसती सतत बडबड व टीका. स्वतः कसे आहोत हे पाहणे नाही. हे भारतात फारच चालते— भारतीय असूनही मला असे म्हणणे भाग आहे. नुसते मांड्या मारून चकाट्या पिटायच्या. सहजयोगाबद्दल काही बोलणार पण नाहीत. किती लोकांना खरा सहजयोग समजला आहे? मला जर पदवी द्यावी लागली तर तुम्हाला मी काय पदवी देणार? सांगा वरे; तुम्हाला तुमची व्हायब्रेन्सही अजून

समजत नाहीत. आता उक्तांतीच्या जाळ्यांत आल्यामुळे तुम्ही सहजयोगी जरूर झालात. पण किती जण त्यांत खोलवर पोचले. तुम्हाला ते मिळवण्यासारखे मात्र आहे.

म्हणून पुन्हा पुन्हा मला तुम्हाला हेच सांगायचे आहे की निरर्थक फालतू गप्पा मारणे आता बंद करा आणि सहजयोगाचे आपल्याला किती ज्ञान आहे हे एकमेकांकडून जाणून घ्या; त्यानेच तुम्ही मला प्रसन्न करून घेणार आहात. तुमचे सहजयोगाचे स्वतःबद्दलचे अनुभव दुसऱ्यांना सांगून त्या ज्ञानात भर पडेल असे करा. अर्थात तुमच्यापैकी पुष्कळजण तसे करतात. मी नाही म्हणत नाही. पण एक जरी तुमच्यामध्ये खराब असेल तर त्याच्यामुळे सगळंच विघडतात— पेटीतला एक खराब आंबा सगळे आंबे खराब करतो तसे हे आहे; तर मग तो खराब आंबा आपण काढून फेकून केंतो ना?

आजूबाजूच्या सर्व वस्तु तुमच्याकडे मूक साक्षीकार म्हणून बघत असतात. मलाही तसेच वाटते. मोठमोठे डोंगर पाहिले की मला वाटते ते सर्व एखाद्या थोर संतांसारखे आपल्याकडे लक्ष ठेऊन बघत आहेत; या जगात जे जे काही घडत आहे त्याची सर्व नोंद ते करून ठेवत आहे. त्यांना जणू सर्व काही समजते. त्यांना सुद्धा ज्ञान आहे. मला पुन्हा पुन्हा हेच सांगायचे आहे; आजच्या या शुभदिवशी स्वतःलाच नीट पहा, तुमच्या स्वतःच्या चक्रांकडे पहा आणि स्वतःमध्ये कोणते दोष आहेत ते जाणून घ्या. त्यांतूनच तुम्हाला चिरंतन आनंद मिळणार आहे, तेच वचन तुम्हाला मिळालेले आहे. त्यानेच तुम्हाला निर्विचार-समाधी मिळेल आणि त्यांतूनच तुम्ही निर्विकल्प समाधी मिळवाल. आपला अहंकार आणि प्रति-अहंकार यांच्या जाळ्यांत कधीही अडकू नका. आज माझा वाढदिवस साजरा करत आहांत म्हणून माझे हेच सांगणे आहे की तुम्ही तुमचाच वाढदिवस साजरा करा; तो साजरा करताना तुम्ही काय मिळवले आहे आणि काय मिळवायचे आहे ह्याचे भान ठेवा. माझा वाढदिवस साजरा करण्यापेक्षा तुम्ही स्वतःचा वाढदिवस साजरा करण्याचा समय आला आहे. मला तर माझा वाढदिवस नव्हे तर तुमचा वाढदिवस साजरा करतांना जास्त आनंद मिळणार आहे.

परमेश्वराचे तुम्हाला आशिर्वाद.
